घोषणा

स्टीफन पिंटो

घोषणा

First Edition : 2013

यह प्रकाशन बिना लेखक के इजाज़त के छापा नहीं जा सकता।

(For private distribution to believers only)

विषय

वचन की घोषणा ७

घोषणा करने का मतलब ७

मूसा की लाठी ८

परमेश्वर का वचन और पवित्र आत्मा ९

परमेश्वर के वचन। शब्दपर काँप उठना ११

परमेश्वर के वचन ग्रहण करना १२

अधिकार चलाना १४

नकारात्मक सोच पर विजय पाना १४

घोषणा में सुरक्षा १६

आर्थिक और शारीरिक ज़रूरतें १७

विश्व के बारे में १८

विरोध करने वाली शक्तियाँ २०

वचन का उपयोग करना २२

परमेश्वर की सुरक्षा में आत्मविश्वास की घोषणा २३

घोषणा के क्षेत्र २४

अपना हृदय तैयार करो २४

मनन करना/ध्यान लगाना २५

घोषणा- अधिकार के साथ २६

मरण और जीवन हमारी ज़ुबान के सामर्थ्य में है २७

घोषणा कब करते हैं? २८

हमारी व्यक्तिगत प्रार्थना के समय २८

आत्मिक युद्ध के वक़्त २९

घोषणाएँ

प्रभु का भय ३१
धार्मिकता और पवित्रता ३३
आरोग्य/स्वास्थ्य और शक्ति ३८
मार्ग-प्रदर्शन, रक्षा और बचाव ४०
परमेश्वर की उपस्थिति लोगों के कार्यों में ४३
परीक्षा और परखना ४५
आत्मिक युद्ध ४७
पूर्ण मुक्ति ४९
मानसिक और भावनाओं के संबंधित स्थिरता ५२
परमेश्वर की सेवकाई ५४
क्रूस पर किया हुआ अदल-बदल ५७
यहोवा के छुड़ाए हुए ये कहें ५८
और कुछ नहीं सिर्फ़ यीशु का खून ५९
परमेश्वर के चरण में आत्मविश्वास की घोषणा ६०

अनेक घोषणाएँ अलग-अलग स्थितियों के लिये

मानसिक तनाव पर विजय पाने की घोषणा ६२

मेरा परमेश्वर मेरे लिये प्रबन्ध करता है ६३

प्रभु यीशु में - मैं सबकुछ कर सकता हूँ ६४

सारे कष्टों, भावनाओं से जीतने के लिये ६५

एक अच्छे बेहतरीन जीवन के लिये ६६

एक पवित्र जीवन के लिये ६७

पवित्र आत्मा कौन है? ६८

पवित्र आत्मा जो मेरे अंदर है ६९

पवित्र आत्मा - मेरी अगुवाई करता है ७०

परमेश्वर मेरी आशा ७१

परमेश्वर मेरा पिता है ७२

युद्ध के हमारे शस्त्र ७३

विवाह में एकता ७४

वचन की घोषणा

विशाल सामर्थ्य होता है, जब हम परमेश्वर के वचन को घोषित करते हैं। बहुत से विश्वासियों को इस रहस्य का पता नहीं है। भले ही हम किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना क्यों न करें जब हम परमेश्वर का वचन उस स्थिति पर घोषित करते हैं, परमेश्वर का जो निर्माण करने का सामर्थ्य है, वह कार्य करता है। हर एक विश्वासी के पास परमेश्वर के वचन को घोषित करने का यह सौभाग्य और कर्तव्य मौजूद है।

किसी भी सभा को शुरू करने से पहले अगर परमेश्वर के वचन को घोषित किया जाय तो आत्मिक वातावरण उत्पन्न होता है, और प्रचारक के अभिषेक पर बहुत फरक पड़ता है।

घोषणा करने का मतलब

घोषणा जो शब्द है, वह रोमानी भाषा से आता है, जिसका मतलब है ''चिल्लाना''/ ''पुकारना'' यह एक मज़बूत शब्द है। नये नियम में इससे मिलता हुआ शब्द है ''कबूल या स्वीकार करना'' याने उसी शब्द को दुहराना। हम विश्वासियों के लिये बाइबल में कबूल करने का मतलब है, कि हम अपने मुख से वही शब्द दुहराते हैं, जो परमेश्वर ने अपने वचन में कहा है। हम अपने मुख के बोल से परमेश्वर के वचन के साथ सहमत होते हैं, या हाँ में हाँ मिलाते हैं।

इब्रानियों ३:१ में लेखक कहता हैं, ''यीशु ही हमारे अंगीकार का महायाजक है''। यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण वाक्य है। अर्थात ''जब भी हम अपने मुख से कबूल करते हैं, जो पवित्र शास्त्र हमारे बारे में कहता है, तब प्रभु यीशु हमारा महायाजक बनकर स्वर्ग में खड़ा रहता है, और इसी वजह से प्रभु यीशु अपना अधिकार और अशिष हम पर उंडेलता है।''

लेकिन, अगर हम चुप रहेंगे, उनका वचन घोषित नहीं करेंगे, तो एक तरह से हम उसकी सेवकाई को रद्द कर देते हैं। एक तरह से हम नकारात्मक शक्तियों को हमारे चारों ओर घूमने देते हैं।

घोषित करने का मतलब अपने अंगीकार को लड़ाई के तौर पर आगे बढ़ाना। यह शब्द आत्मिक युद्ध के बारे में लागु होता है। हम परमेश्वर के वचन के सामर्थ्य को लेकर उस स्थिति पर आक्रमण करते हैं। अपने जीवन पर, अपनी कलिसिया पर, अपने देश की

स्थिति पर, जो भी कुछ होगा उस पर हम वचन से आक्रमण करते हैं। संसार में ऐसी अनेक स्थितियाँ हैं जहाँ पर परमेश्वर के सामर्थ्य को बताना ज़रूरी है। घोषणा करने के अलावा और कोई असरदार रास्ता नहीं है, जिस पर हम परमेश्वर का सामर्थ्य बता सकते हैं।

मशहूर बाइबल स्कॉलर डेरीक प्रिन्स का एक रेडियो कार्यक्रम हो रहा था। उसी वक़्त एक महिला चीन (दक्षिण) में एक नाव पर थीं उस महिला ने संसार में बहुत सारे गंदे काम किये थे। (महिलाओं के साथ गलत संबंध, इत्यादि) इन्हीं दुष्ट महिलाओं के साथ नाव पर वह जब थी, किसी ने उसे कहा, नीचे जाकर रेडियो चालू करके देखो कि तूफान के बारे में क्या खबर हैं।

उसी वक्त रेडियो बाइबल क्लास रेडियो पर चालू था। उन्होंने वे सारे वचन स्वीकार किये जिससे उन्होंने उद्धार पाया। वह महिला बदल गयी। अब वह बिलकुल बदल गयी। संसार से यीशु की ओर आई। कारण क्या था? उन्होंने रेडियो पर कोई शिक्षा नहीं ली, लेकिन प्रभु का जो वचन (घोषित) किया जा रहा था उसने अपना काम किया।

मूसा की लाठी

मूसा के उदाहरण को देखेंगे, जब परमेश्वर ने उसे इस्त्राएलियों को मिस्त्रियों के वंश से छुड़ाने के लिये बुलाया। मूसा तब अस्सी साल का था, और अपना आत्मविश्वास खो बैठा था। उसने कहा, मैं क्यों प्रभु? मैं कुछ नहीं कर सकता।

परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''तुम्हारे हाथ में क्या है?'' उन्होंने कहा यह तो लाठी है जो हर चरवाहा उस वक़्त लेता था। उन्हें पता नहीं था कि उस लाठी में कुछ खासियत है। लेकिन पिता परमेश्वर ने कहा, ''इसे जमीन पर फेंक दो'' जब मूसा ने ऐसा किया तो वह लाठी साँप में बदल गयी और मूसा अपनी ही लाठी से डरकर भाग गया। मतलब, इस लाठी में ऐसा सामर्थ्य था जो मूसा को पता नहीं था।

फिर पिता परमेश्वर ने कहा ''साँप को अपनी पूंछ से पकड़कर उठा लो'' इतिहास सिखाता है कि साँप को अपनी पूंछ से कभी नहीं पकड़ना चाहिए। लेकिन मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और वह साँप फिर से लाठी बनी। परमेश्वर ने कहा, अब इसी लाठी को लेकर जा, जो तुम्हारे लिये काफी है। अपना सारा काम अब तुम इसी लाठी के द्वारा करोगे।

अगर हम आगे चल कर देखें तो निर्गमन की पूरी पुस्तक में परमेश्वर इस्त्राएल को इसी लाठी के द्वारा मुक्ति दिलाता है। जब जब मूसा चाहता कि इस कठिन स्थिति में परमेश्वर सहायता दे, मूसा ने अपनी लाठी को आगे बढ़ाई और परमेश्वर चमत्कारिक रूप में मौजूद था।

लाल समुद्र को जब अलग करना था मूसा ने अपनी लाठी आगे बढ़ाई और समुद्र का पानी एक दिवार की तरह एक ओर हुआ।

जब मिस्त्र देश के लोग समुद्र को पार करना चाहते थे, इस्त्राएलियों को खत्म करने के लिये, तब मूसा ने फिर अपनी लाठी आगे बढ़ाई और समुद्र के पानी ने उन्हें डुबा दिया। पूरे काम तमाम करने के लिये मूसा को चाहिए थी, वह लाठी ! उसी लाठी को जिसे उन्होंने कहा कि वह एक चरवाहे की लाठी है।

परमेश्वर का वचन और पवित्र आत्मा

हर एक विश्वासी के पास अपने हाथ में एक लाठी है, परमेश्वर का वचन। सोचो कि मूसा की तरह तुम्हारे हाथ में सिर्फ़ बाइबल या पवित्र वचन है जिसके द्वारा तुम सब काम कर सकते हो जो परमेश्वर चाहता है।

पहली बात हमें यह मालूम होना है कि परमेश्वर के वचन का सामर्थ्य क्या है। यह एक अद्‌भुत काम करनेवाली पुस्तक है, जिस तरह मूसा की उस लाठी में सामर्थ्य था। यह ज्ञान पहले देखने से पता नहीं चलता, लेकिन हम जब इसे समझने लगते हैं, तो इसके सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं है।

हम थोड़े वचनों पर गौर करेंगे, जिससे वचन का सामर्थ्य जान सकें।

आकाशमण्डल प्रभु के वचन से और उसके सारे गण उसके मुँह की श्वास से बने है। (भजन संहिता ३३:६)

सारी सृष्टि का निर्माण दो जनों के द्वारा हुआ। परमेश्वर का वचन और उसकी आत्मा। वचन पवित्र आत्मा के साथ काम करता है। इसीलिए भजन संहिता में श्वास और आत्मा नहीं कहा गया है। हम किस तरह बोलते हैं? हम अपने फेफड़ों से श्वास छोड़ते हैं, और उसे अपने मुँह से और नाक से छोड़कर अपने शब्दों की आवाज़ को परखते हैं।

सच्चाई यह है कि हम श्वास के बिना बात नहीं कर सकते। यही चित्र परमेश्वर के बोलने का भी है। हर वक़्त जब परमेश्वर कुछ बोलता है अपनी श्वास (आत्मा) के द्वारा बोलता है। वचन और आत्मा साथ में चलते हैं। शब्द और श्वास के द्वारा सृष्टि का निर्माण हुआ और अब तक यही सृष्टि सुरक्षित है।

२ पतरस ३:५ एक शक्तिशाली वाक्य है जो तीन चीजों के बारे में बताता है। शब्द निर्माण करता है, शब्द संभालता है और शब्द मिटा भी देता है।

परमेश्वर के वचन के द्वारा आकाश प्राचीनकाल से स्थापित है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है, इसी कारण उस युग का जगत जल में डूब कर नष्ट हो गया। पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी इसी वचन के द्वारा इसलिये रखे गए है, कि जलाए जाएँ और ये अविश्वासियों के न्याय और नष्ट होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे।

तो परमेश्वर के शब्द के द्वारा स्वर्ग स्थापित किया गया, उसके शब्द से ही अभी तक स्थिर है और इसी शब्द के द्वारा जब परमेश्वर का वक़्त आयेगा, उसे नष्ट किया जायेगा। मतलब परमेश्वर का वचन निर्माण करता है, उसे स्थिर रखता है, और उसे नष्ट भी करता है।

जैसे कि यशायाह ५५:१०-११ में लिखा है, कि यह शब्द जो है परमेश्वर के मुख से आना ज़रूरी है, नहीं तो उसका कोई असर नहीं होगा।

१०) जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहाँ यों ही लौट नहीं जाते वरन धरती पर गिरकर अन्न उपजाते हैं, जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवले को रोटी मिलती है, ११) उसी प्रकार मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है, वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है, उसे वह सफल करेगा।

ध्यान रहे कि परमेश्वर ने कहा, ''मेरा वचन जो मेरे मुख से निकलता है'' कहा जाये तो ''मेरा शब्द जब मेरी श्वास के साथ निकलता है।''

२ कुरिन्थियों ३:६ पौलुस कहता है शब्द या वचन (आज्ञा, नियम) मारता है, लेकिन पवित्र आत्मा जिलाता है। मतलब वचन जो है, बिना पवित्र आत्मा के, या परमेश्वर की श्वास से नहीं चलता है, नहीं, तो वह सूखा रहेगा। उसमें कोई जान नहीं रहेगी। वह मृत्यु लेकर आता है। दोनों आत्मा और शब्द को साथ में चलना है।

मैं बताना चाहता हूँ कि घोषित करना या पुकारने का मतलब है कि इसको हम एक स्थिति पर घोषणा करते हैं।

यह परमेश्वर का वचन है, वह इतना ही असरदार है जितना हम अपने मुख से, उसको पवित्र आत्मा के द्वारा बोलते हैं। उस शब्द को परमेश्वर के बोलने की ज़रूरत नहीं है। अगर परमेश्वर का आत्मा आपके मुख से उनका वचन दुहराता है, वह उतना ही असरदार है, जब परमेश्वर ने अपने मुख से सृष्टि का निर्माण किया।

परमेश्वर के वचन / शब्दपर काँप उठना

सबसे पहले मूसा डर गया। उसने अपनी लाठी को ज़मीन पर फेंक दिया वह लाठी साँप में बदल गयी और वह डर के मारे भाग निकला। हमें भी घोषणा करने से पहले प्रभु के वचन से डरना है। हमें वचन पर काँपने के लिये सीखना है।

प्रभु की यह वाणी है ''आकाश मेरा सिहाँसन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है'' तुम मेरे लिये कैसा भवन बनाओगे, और मेरे विश्राम का कौन-सा स्थान होगा? ये सब वस्तुएँ मेरे ही हाथ की बनाई हुई है, ''परन्तु मैं उसी की ओर दृष्टि करूँगा जो दीन और खेदित मन का हो और मेरा वचन सुनकर थरथरता हो।''
(यशायाह ६६:१-२)

परमेश्वर कहता है कि हम ऐसी कोई भी चीज़ बाँट नहीं सकते जिससे कि वह आकर्षित हो। क्योंकि उन्होंने सारी पृथ्वी को रचा है। लेकिन एक चीज़ है जिस पर वह नज़र डालता है (और एक शास्त्र में इसे कहा गया है) जिसको वह सम्मान दे सके।

परमेश्वर किस व्यक्ती को सम्मान देगा? या किस व्यक्ती पर नजर डालेगा? ''वह जो दीन और खेदित मन का है और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो।''

मूसा की तरह हमारा पहला बर्ताव डर होगा या परमेश्वर के वचन पर थरथराना होगा। आज के ज़माने में बहुत ही कम लोग हैं जो उसके वचन से डरते हैं। हम इसे नज़रअंदाज करते हैं। हम इस वचन का आदर नहीं करते। हमें इस बर्ताव से बदलना होगा।

मैं दो उदाहरण देना चाहता हूँ, जिससे हम जाने कि हमें परमेश्वर के वचन से क्यों थरथराना है।

यूहन्ना १२:४७-४८ यीशु ने कहा, ''यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं संसार को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु संसार का उद्धार करने के लिये आया हूँ। जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है, उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है, अर्थात जो वचन मैं ने कहा है, वही अंतिम दिनों में उसे दोषी ठहराएगा।''

हम सभी को प्रभु के वचन के द्वारा जाँचा जायेगा। कल्पना करो कि आप परमेश्वर के सामने खड़े हैं, अपने जीवन का हिसाब देने के लिए।

मैं समझता हूँ कि हम सबको एक दिन हिसाब देना है। मैं समझता हूँ कि हम सब काँपना शुरू करेंगे- यीशु कहता है कि परमेश्वर के वचन की ओर भी हमारा यही बर्ताव होना चाहिए, क्योंकि प्रभु का वचन ही हमें अंतिम दिनों में काम आयेगा। हर बार जब हम पवित्र शास्त्र के पन्ने खोलेंगे, तो हम उस वचन पर नज़र डाल रहे हैं, जो हम को एक दिन जाँचेगा, या हमपर न्याय करेगा। इसलिये वचन के सामने काँपना ज़रूरी है।

और फिर यूहन्ना १४:२३ में यीशु और एक आश्चर्यचकित बात कहता है, ''यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ निवास करेंगे।''

याने (हम) पिता और पुत्र, उनके पास आयेंगे- कैसे आयेंगे? उनके वचन के द्वारा।

मतलब यह हुआ कि जब हम परमेश्वर के वचन के प्रति मन खोलेंगे, परमेश्वर स्वयम पिता और पुत्र- अपने जीवन में आयेंगे और हमारे साथ निवास करेंगे।

जब तक कि हम परमेश्वर के वचन का आदर नहीं करेंगे, उनका वचन हमारे जीवन पर असर नहीं करेगा।

परमेश्वर के वचन ग्रहण करना

पहली बात जो मूसा ने अनुभव की - उसके वचन पर थरथराना, काँपना। उन्होंने तुरन्त ही परमेश्वर के सामर्थ्य को पहचान लिया जो उस लाठी में था और वह दूर भागने लगा।

दूसरी बात उन्होंने लाठी को पकड़ा। विश्वास से उन्होंने पकड़ा और फिर से उनके हाथों में लाठी बन गई।

मतलब पहले हम काँपते हैं, फिर हम उसे कसकर पकड़ते है।

भजन संहिता का १४९ अध्याय बहुत सामर्थ्य से लिखा है। ''भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हो और अपने बिछौनों पर भी पड़े पड़े जय जयकार करें।'' भक्त लोग वह है जो आत्मा और सच्चाई से विश्वासी है, जो परमेश्वर के वचन सुनने पर थरथराते हैं और वचन पर पूरी तरह निर्भर होते हैं।

''उनके कण्ठ से परमेश्वर की प्रशंसा हो और उनके हाथों में दोधारी तलवार रहे, कि वे जाती जाती से बदला ले सके और राज्य के लोगों को ताड़ना दे और उनके राजाओं को जञ्जीरों से और उनके खास पुरूषों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ रखे और उनको ठहराया हुआ दण्ड दे। उनके सब भक्तों का ऐसा ही आदर होगा।''

ये बहुत ही अजीब के वाक्य हैं। क्या आप अपने आपको इन भक्तों में शामिल किये हुए देख सकते हैं? अगर हमारे पास अपने कण्ठों में परमेश्वर की स्तुति हो और हाथों में दोधारी तलवार, तो हम देशों पर जाँचना शुरू कर सकते हैं, क्या आप अपने आपको इस कार्य में, विश्वास से हिस्सेदार हो सकते हैं? यह आदर हम सभी भक्तों को दिया गया है।

हमारा कितना महान कर्तव्य है। मैं समझता हूँ कि अगर हम ऊपर बताये हुए वाक्यों में (भक्त होने के नाते) शामिल है, तो हमारा प्रार्थना करने का ढंग कुछ अलग होगा।

ध्यान रहे कि कहा गया है ''उनको ठहराया हुआ दण्ड दे''। यह लिखा हुआ दण्ड क्या है? कहाँ पर लिखा गया है? - वचन में- हम जाँचने वालों में से नहीं है, दण्ड देनेवालों में से नहीं है, परमेश्वर ने यह दण्ड ठहराया है, लेकिन यह हमारा सौभाग्य है कि हम यह दण्ड देंगे, सचमुच कहा जाये तो विश्वासियों को इतिहास में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भाग लेना है।

लेकिन दुख की बात ये है कि विश्वासी लोग ये समझ नहीं पाते कि परमेश्वर ने हमारे लिये क्या क्या रखा है- यह न बताते हुए कि वह हमसे क्या चाहते हैं। मैं गौर करना चाहता हूँ कि हम जाँचते नहीं है (दण्ड नहीं देते) लेकिन यह दण्ड परमेश्वर के वचन में लिखा गया है। अपना काम इन्हें कार्य में लाना है।

हम ये कैसे कर सकते हैं? वचन को घोषित करते हुए जो पहले से ही पवित्र शास्त्र में लिखे गये हैं। हमें सिर्फ़ इन्हें घोषित करना है। हम घोषणा करनेवाले लोग है। हमें दुनिया की गलियों में या बाज़ारों में खड़े होकर घोषित करना है ''सुनो सुनो!'' फिर हमें उनके वचन दुहराने हैं।

अधिकार चलाना

अब हम अगले कदम पर बढ़ रहे हैं। अब अभ्यास सम्बन्धी मैं दुनिया की तरह बातें करना चाहता हूँ। मूसा ने अपनी लाठी पकड़ने के बाद क्या किया?

जब वह मिस्र देश में वापस चला गया, तो उन्होंने अपनी लाठी आगे बढ़ाई (फैलाई) उन्होंने अपना अधिकार जताया जो उस लाठी में था। मैं यह दुहराना चाहता हूँ कि हमें भी यही चाल चलनी चाहिए। हमें प्रभु के जीवित वचनों को लेकर संसार, की हर एक स्थितियों में फैलाना चाहिए, जहाँ पर परमेश्वर के अधिकार की ज़रूरत है।

सबसे असरदार चीज़ जो है जिससे परमेश्वर का सामर्थ्य उस स्थिति में नज़र आता है, वह है ''घोषणा'' परमेश्वर के वचन की घोषणा। विश्वास के साथ और प्रभु के अभिषेक के साथ। याद रहें शब्द के साथ साँस ज़रूरी है। जब साँस या पवित्र आत्मा के साथ वचन निकलता है हम इसे एक स्थिति के अंदर घोषित कर सकते हैं और उन शब्दों में परमेश्वर का सारा अधिकार है, जो उस स्थिति को काबू में या बस में कर सकता है।

परमेश्वर ने अपने सिहाँसन से उतरकर मूसा से यह नहीं कहा, ''यह लाठी मुझे दे तुम्हारे लिये मैं यह काम करूँगा'' नहीं हमारे पास लाठी है हमें खुद इसे इस्तेमाल करना है। इसे असल में परमेश्वर की लाठी कहा गया है (निर्गमन ४:२०) लेकिन मूसा ही ने इसका इस्तेमाल किया। ऐसे बहुत सारी स्थितियों में परमेश्वर की लाठी की ज़रूरत है। हम इस पुस्तक में देखेंगे कि हम किस तरह इस लाठी (वचन) का राष्ट्रीय या अंतराष्ट्रीय स्थितियों में घोषणा कर सकते हैं।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि घोषणा या चिल्लाने में ही ज़्यादा सामर्थ्य है। यह सब पवित्र आत्मा पर निर्भर होता है। अपनी अलग-अलग स्थितियों के अनुसार कभी-कभी तो ये वचन मन में भी बोले जा सकते हैं। (वातावरण के अनुसार)

यह सब अपनी अपनी अलग-अलग परिस्थितियों पर निर्भर होता है।

नकारात्मक सोच पर विजय पाना

याद रखें वे लोग जो नकारात्मक बातें सिर्फ़ सोचते ही नहीं पर बोलते भी हैं, सिर्फ़ एक या दो बार वचन घोषणा करने से कुछ नहीं होगा। आपको इसे बार-बार लगातार जारी रखना है। ताकि स्वर्गीय स्थानों में बदलाव आ सके। इन घोषणाओं की ऐसी आदत

होनी चाहिए कि आपकी सोच वचनों के अनुसार ही हो और ये आपकी ज़िदगी का एक हिस्सा बन जाये।

जब भी मैं कोई कठिन परिस्थिति मैं होता हूँ, तो सारी नकारात्मक बातें मेरे विचारों में उभर आती है। आपके साथ भी यही हो सकता है।

मैं परमेश्वर के वचन का हथियार/शस्त्र अलग-अलग तरीकों से इस्तेमाल करता हूँ। (यिर्मयाह २९:११) परमेश्वर इस्राएल से कहता है ''जो विचार मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि के नहीं वरन कुशल ही क़े हैं और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा।''

और एक अनुवाद में कहा गया है ''योजना तुम्हारी उन्नति के लिये, हानि पहुँचाने के लिये नहीं।''

हर बार जब मैं कोई नकारात्मक विचार सोचता हूँ मैं कहता हूँ ''परमेश्वर मैं धन्यवाद देता हूँ कि मेरी सारी योजनाएँ तुम्हें पता है, बुराई के लिये नहीं परन्तु अच्छाई के लिये, उन्नति के लिये, मेरे हानि के लिये नहीं, मुझे एक आशा और भविष्य देने के लिये।''

इसे मैं बार-बार दुहराता हूँ और फिर अंत में नकारात्मक वातावरण निकल जाता है, और मैं परमेश्वर के वचन के अनुसार सोचने लगता हूँ। अगर दिन के आरंभ में आप कहेंगे कि ''आज मेरा दिन अच्छा होगा'', आप वे सारी चीजें हासिल करेंगे जिसे आप चाहते थे।

आपका बर्ताव जो दूसरों के प्रति है, आपके जीवन में बहुत परिवर्तन ला सकता है। समझिये कि आप किसी दुकान में घूसे सही बर्ताव के साथ, दुकान के काम करनेवाले आपके साथ रहेंगे। अगर आप ये सोचकर जायेंगे कि मेरी सेवा सही तरह नहीं होगी तो वैसे ही आपको मिलेगा।

मैं समझता हूँ कि जो भी घोषणाएँ हम करते हैं जहाँजहाँ पर पवित्र शास्त्र 'आप' या 'तुम' कहता है वहाँ पर ''मैं'' कहो। समझों कि आप डरावने नकारात्मक विचार कर रहे हैं, तो आप लगातार ये सोचेंगे कि क्या होगा अगर मैं मर जाऊँगा तो। ऐसा हो सकता है कि आपका अस्पताल में ऑपरेशन है और डॉक्टर कहता है कि आपका जीवन खतरे में है। यहाँ पर हम ये वचन इस्तेमाल कर सकते हैं। ''मैं मरूँगा नहीं जीवित रहूँगा और प्रभु के कामों को घोषित करता रहूँगा।'' (भजन संहिता ११८:१७)

घोषणा में सुरक्षा

समझो कि लोग तुम्हारे विरूद्ध बोलकर प्रार्थना भी तुम्हारे विरूद्ध कर रहे हैं। इसका उत्तर है, (यशायाह ५४:१७)

''जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएँ उन में से कोई सफल न होगा और जितने लोग तुझे बुरा कहेंगे उन सब से तू जीत जायेगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे।''

जब हर रात को हम इस वचन को दुहराएँगे और कहेंगे कि हमारी धार्मिकता प्रभु की ओर से है, यही कारण है कि हम उन सारे ज़ुबानों को बंद कर सकेंगे जो हमारे विरूद्ध बोल उठेंगे। वे परमेश्वर की धार्मिकता को ठुकरा रहे हैं, मतलब वे हारने वाले ही हैं। मैं तो आगे बढ़कर यह भी कहूँगा कि जो लोग हमारे विरूद्ध बोलते हैं या हानि की सोचते है हम उन्हें माफ करते हैं और क्षमा करते हैं और प्रभु यीशु के नाम से उन्हें आशिष देते हैं।

हमें हर बार नकारात्मक बातों को प्रभु के वचनों में बदल देना चाहिए।

पवित्र शास्त्र कहता है कि अगर लोग हमें शाप देते हैं, हमें उन्हें फिर से शाप नहीं देना चाहिए लेकिन उन्हें आशिषित करना चाहिए।

पौलुस कहता है ''बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो''। (रोमियों १२:२१)

भलाई ही एक ऐसा सामर्थ्य है, जो बुराई पर काबू पाकर हमें मज़बूत कर सकता है।

अगर हमारी सेवकाई पर आक्रमण हो रहा है हम ज़्यादातर यह घोषणा करते हैं (व्यवस्था विवरण ३३:२५-२७)

''तेरे फाटकों के खिल्ले (दरवाजे) लोहे और पीतल के होंगे और हमारी शक्ति, हमारे जीवन के दिनों के बराबर होगी।''

हे यशूरून ईश्वर के तुल्य और कोई नहीं है। वह हमारी सहायता करने को आकाश पर और अपना प्रताप दिखाता हुआ आकाश मण्डल पर सवार होकर चलता है। अनंतकाल का परमेश्वर हमारा शरण स्थान है और नीचे उनकी सनातन भुजाएँ हैं, वह शत्रुओं को हमारे सामने से निकाल देता और कहता है ''उनका सत्यानाश कर दे।''

इस तरह की घोषणा करने से शैतान सचमुच घबरा जाता है। याद रहें कि हमारा युद्ध माँस और खून से नहीं परन्तु अंधकार की और कुकर्म की शक्तिओं से है, जो स्वर्गीय स्थानों में बसे हैं। जो शस्त्र परमेश्वर हमें देता है वे बहुत ही सामर्थ्य है, लेकिन हमें उन्हें सही जगह पर इस्तेमाल करना चाहिए।

आर्थिक और शारीरिक ज़रूरतें

आपकी अलग-अलग ज़रूरतें होगी, आर्थिक शारीरिक, जो कुछ भी, पैसों की स्थिति के लिये हो, हम घोषणा करेंगे २ कुरिन्थियों ९:८ ''परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय सब कुछ जो तुम्हें आवश्यक हो तुम्हारे पास रहे और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।''

ये तीनों शब्दों से शुरू होता है ''परमेश्वर दे सकता है'' आगे कहा गया है वह क्या कर/दे सकता है। इस वाक्य में जो शब्द '**सब प्रकार**' या '**सब कुछ**' पर ज्यादा महत्त्व दिया गया है।

ये सब प्रकार का अनुग्रह है और इसे किस तरह पाया जा सकता है? ''आप विश्वास के साथ अनुग्रह से बचे हैं।'' इस अनुग्रह को हम कमा नहीं सकते या इसके लायक नहीं हो सकते। इस अनुग्रह को हम सामाजिक तौर पर नहीं पा सकते। हमें सारा अनुग्रह जो है विश्वास के द्वारा मिलता है। और ये जो वाक्य है हमारी आर्थिक स्थिति की नीव है।

समझ लो कि आप ऐसी स्थिति में फँस गये हैं और आप समझते हैं कि आप कुछ नहीं कर सकते। आपको लगता है कि आपका शिक्षण इस मुकाबले में सही नहीं है, आपमें शारीरिक बल भी नहीं है, उतनी बुद्धि भी नहीं है, जो इस स्थिति को ललकारती है।

इस स्थिति में हमें फिलिप्पियों का ४:१३ पढ़ना चाहिए।
''जो मुझे सामर्थ्य देता है, उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।''

मतलब एक तरह का सामर्थ्य है जो हमारे **कबूल** करने से आता है या हमारे **घोषणा** करने से आता है। भले ही मेरे पास शिक्षण बल और बुद्धि न हो, लेकिन अगर जो ये काम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है, तो फिर एक है जो मुझे अंदर से सामर्थ्य देता है।

यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो आपके चंगाई का वाक्य यह होगा- १ पतरस २:२४

''वह आप ही अपने पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ। इसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।''

यहाँ पर हम देखेंगे कि यह वाक्य या वचन भूतकाल में है। लगभग सात सौ साल पहले ही (यीशु के आने से) यशायाह ने कहा था ''उनके घावों से हमें चंगाई मिली है।'' (यशायाह ५३:५) इसके बाद पतरस लिखता है ''जिसके घावों से तुम्हें चंगाई मिली है।'' इसका मतलब ये नहीं कि आप कभी भी बीमार नहीं होंगे। कभी-कभी तो आपको लगातार कबूली करना है इस वचन पर। आपको निर्णय लेना है, कि कौनसा वाक्य ज़्यादा भरोसेमंद है। परमेश्वर का वचन या आपकी बीमारी के लक्षण?

विश्व के बारे में

अब इस प्रार्थना में वचनों पर ज़्यादा आक्रमण करने की ज़रूरत है। इस वक्त हम देश और परदेश के बारे में सोच रहे हैं। यहाँ पर हम कई वचनों पर ज़ोर डालेंगे।

मुख्य रूप से दानिय्येल २:२०-२२ और ४:३४-३५ पहला वचन दानिय्येल का है। (२:२०-२२)

परमेश्वर का नाम युगानयुग धन्य है क्योंकि बुद्धि पराक्रम उसी के है। समयों को और ऋतुओं को वही बदलता है। राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है। बुद्धिमानों को बुद्धि और समझदारों को समझ भी वही देता है। वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है; वह जानता है कि अंधियारे में क्या है और उसके संग प्रकाश बना रहता है।

४:३४-३५ ''उसकी प्रभुता सदा की है और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहनेवाला है।''

पृथ्वी के सब रहनेवाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं। और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है और उसको रोक कर नहीं कह सकता ''तू ने यह क्या किया है?''

ध्यान रहे पहला भाग जो है (२:२०-२२) दानिय्येल नबी के द्वारा है, दूसरा भाग (४:३४-३५) एक राजा के मुख से निकलता है जो कि पहले अविश्वासी था। इसीसे हमें प्रोत्साहित होना चाहिए कि परमेश्वर बुरे राजाओं का दिल बदल सकता है अगर हम किस तरह प्रार्थना करनी है सीखे।

और फिर दो ऐसे वचन हैं २ इतिहास में, वे दोनों एक एक वाक्य की प्रार्थनाएँ है और आम तौर पर हम इन्हें बोलते हैं (और गहराही में जाने से पहले)। पहला वाक्य है, २ इतिहास १४:११

''हे यहोवा जैसे तू सामर्थी की सहायता कर सकता है, वैसे ही शक्तिहीन का भी, हे हमारे परमेश्वर यहोवा हमारी सहायता कर क्योंकि हमारा भरोसा तुम्ही पर है और तेरे नाम का भरोसा करके हम इस भीड़ के विरूद्ध आए है। हे यहोवा तू हमारा परमेश्वर है मनुष्य तुझ पर प्रबल न होने पाएगा।''

दूसरा वाक्य है २ इतिहास २०:६- हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति जाति के सब राज्यों के उपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता?

अब हम भजन संहिता ३३:८-१२ को लेंगे जो कि एक शक्तिशाली कबूली की प्रार्थना है जब हम विश्व के लिये प्रार्थना कर रहे हैं।

''सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरे जगत के सब निवासी उसका भय माने। क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया, जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया।''

''यहोवा जाति जाति की युक्तियों को व्यर्थ कर देता है।
वह देश-देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है।
यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी उसके मन की कल्पनाएँ पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेगी।
क्या ही धन्य है वह जाति जिसका परमेश्वर यहोवा है।
और वह समाज जिसे उसने अपना निज भाग होने के लिये चुन लिया है।''

दूसरे शब्दों में कहा जाये तो किसकी जीत होनेवाली है? उस देश की जिसका परमेश्वर यहोवा है। देशों की, प्रभुताओं की, प्रधानताओं की सारी कल्पनाएँ व्यर्थ है, अगर वे प्रभु की इच्छाओं के अनुसार न हो।

विरोध करने वाली शक्तियाँ

अंत में हम इस्त्राएल देश की ओर जो पंक्तियाँ है, उन पर ध्यान देंगे। कई सालों से प्रार्थनाएँ हो रही हैं, जिसके लिये आपके हृदय में वही बोझ न होगा, लेकिन आप उसके नियम अपनी अपनी स्थितियों में इस्तेमाल कर सकते हैं।

कुछ सालों में ये एक सामान्य बात हो गयी है, जहाँ पर हम उत्तर अफ्रिका और मध्य पूर्व (मिडल इस्ट कहते हैं) जगहों पर जिन्हें १०/४० की खिड़की मानी जाती है रेगिस्तान की जगह है।

यहाँ पर उन सारे क्षेत्र में या गाँवों में नज़र डाली जाती है जहाँ पर किसीने अपना पैर नहीं रखा है। और जो लोग यीशु के समाचार को सुनना ही नहीं चाहते। मैं विश्वास करता हूँ कि यहाँ पर कई ऐसी घोषणाएँ होती है जिसकी वजह से वे प्रभु के समाचार को स्वीकार नहीं करते।

आप लोग जानते ही होंगे कि दिन में पाँच बार हररोज, मस्जिदों से घोषणा की जाती है कि ''और कोई परमेश्वर नहीं है सिवाय अल्ला के और मुहमद उनका नबी है।''

ये घोषणा हर रोज लगभग १४०० वर्षों से चली आ रही है। आपको कोई गिनती करने की ज़रूरत ही नहीं कि ये घोषणा करोड़ों बार पीढ़ी से पीढ़ी चली आ रही है। इससे हमने ये सीखना है कि कैसी शक्तियाँ हैं जो उस क्षेत्र में राज्य कर रही है। मैं समझता हूँ कि ये सारी बातें घोषणा के कारण ही है। इसके नियम भले ही किसी क्षेत्र में क्यों न लागू होते हो। इसके नियम ही स्वयंम शक्तिशाली है। कोई भी घोषणा क्यों न हो, इसका राज्य या स्थापना उस व्यक्ति पर निर्भर होता है जो इन शब्दों के पीछे है।

यह घोषणा के दृष्टांत हम मूसा और मिस्त्र देश के जादूटोना वालों के साथ में देखते हैं। भले ही उन जादूटोना वालों ने मूसा की लाठी की तरह अपनी लाठियों को भी साँपों में बदल दिया, लेकिन मूसा की लाठी ने मिस्त्र के साँपों को खा डाला। क्यों? क्योंकि मूसा उन जादूटोना वालों से सामर्थी था। परमेश्वर अपने वचन की रखवाली करता है। वह अपने वचन बिना कार्य में बदले नहीं कहता।

जब परमेश्वरने यिर्मयाह को अपने युवापन में ही देशों के लिये नबी बनाकर चुना, तब परमेश्वर ने उन्हें यह तसल्ली दी थी कि वह अपना वचन उनके द्वारा कार्य में बदलेगा। परमेश्वर ने यिर्मयाह से कहा ''तुम सही देख रहे हो, क्योंकि मैं अपने वचन को कार्य में

बदलने के लिये ठहर रहा हूँ।'' और एक अनुवाद में कहा गया है ''मैं अपने वचन का कार्य करने के लिये तैयार हूँ।''

हमारी जो घोषणाएँ है, वह तब स्थापित रहेगी, जब हम जानेंगे कि परमेश्वर के वचन को किस तरह घोषित करना है, और उससे भी ज़्यादा, हमें मालूम होना है कि जिस परमेश्वर की हम सेवा करते हैं, वह अपने वचन को कार्य में बदल कर ही रहेगा।

तकनीक से भी संबंध ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है।

अब हम दो वचनों पर गौर करेंगे जिनकी इस्त्राएल और उसकी धरती पर घोषणा की गई है।

पहला वचन है भजन संहिता १२५:३

''क्योंकि दृष्टों का राजदण्ड धर्मियों के भाग पर बना न रहेगा।''

इस स्थिति का मतलब है कि किसी भी दृष्ट शक्तियों की चाल विश्वासियों के विरूद्ध सफल नहीं होगी। यह वचन हमें पूरे विश्वास के साथ कहने होंगे विशेषकर जब सारी स्थितियाँ हमारे विरूद्ध होगी। असल में यही सही समय है घोषणा करने की। परमेश्वर के वचन को घोषित करने से (विश्वास के साथ) वाक्य में हम अपने अधिकार की लाठी को आगे बढ़ा रहे हैं। और हमारी लाठी या साँप, जादूटोना वाले साँपों पर विजय पायेगी या उनको खा जायेगी।

दूसरी घोषणा इस्त्राएल के विषय में भजन संहिता १२९:५-६

''जितने सिय्योन से बैर रखते हैं उन सभों की आशा टूटे और उनको पीछे हटना पड़े। वे छत पर की घास के समान हो जो बढ़ने से पहले सूख जाती है।''

मैं उन सारे लोगों को चेतावनी / सूचना देता हूँ जो सिय्योन से बैर रखते हैं, वे लोग कभी भी आगे नहीं बढ़ेंगे, वे बढ़ने से पहले ही सूख जायेंगे। यही परमेश्वर का वचन है। और यह घोषणा होकर ही रहेगी।

हम और एक वचन पर ध्यान देंगे जो कि इस्त्राएल के पुन:निर्माण पर लिखा है। (यिर्मयाह ३१:७)

याकूब के कारण आनंद से जय जयकार करो, जातियों में जो श्रेष्ठ है उसके लिये ऊँचे शब्द से स्तुति करो और कहो ''हे यहोवा अपनी प्रजा इस्त्राएल के बचे हुए लोगों का उद्धार कर।''

ये जो शब्द है गाओं, जय जयकार करो, घोषित करो, स्तुति करो और प्रार्थना करो। ये सारे कार्य के वचन है, जिसमें हम भाग ले सकते हैं। देखें कि किस तरह ये शब्द ''घोषणा'' भी है। और दसवें वाक्य में लिखा गया है,

''हे जाति जाति के लोगों, यहोवा का वचन सुनो और दूर दूर के देशों में भी इसकी घोषणा करो, कहो जिसने इस्त्राएलियों को तितर-बितर किया था, यहीं उन्हें इकट्ठा भी करेगा और उनकी ऐसी रक्षा करेगा जैसे चरवाहा अपने झुण्ड की करता है।''

यह वचन हम उन सारे देशों के ऊपर घोषणा कर सकते हैं खास कर १०-४० खिड़की जिसे कहते हैं (यहाँ पर प्रभु का वचन सुननेवाले कम लोग हैं) परमेश्वर के लोग होने के नाते हम भी प्रभु के वचन की घोषणा करने में भाग ले, जब तक कि स्थिति सच्चाई में न बदले।

वचन का उपयोग करना

उदाहरण के तौर पर बहुत सारे वचनों को घोषणा के आधार पर हम एक साथ पढ़ेंगे। इस घोषणा को लगभग हर दिन मैं दुहराता हूँ और मेरे व्यक्तिगत जीवन में बहुत सुधार आया है।

बहुत सारे लोगों ने गवाही दी है कि किस तरह उन्होंने प्रभु के सामर्थ्य को महसूस किया है जब उन्होंने वचन की सच्चाई को घोषित किया।

मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आप इन सारी घोषणाओं को लेकर इनपर मनन करें और पूरे विश्वास के साथ अपने जीवन में इस्तेमाल करें। आप इन्हें सुबह उठते ही या रात को सोने से पहले इस्तेमाल कर सकते हैं।

मैं विश्वास करता हूँ कि जब आप इन्हें ज़ोर से चिल्लाकर घोषणा करेंगे तो ज़्यादा असरदार होगा। बहुत अच्छा होगा अगर इन घोषणाओं को बार-बार दुहराएँ, क्योंकि इससे प्रभु का वचन आपकी आत्मा के अंदर डूब जायेगा और कार्य करना शुरू करेगा।

परमेश्वर की सुरक्षा में आत्मविश्वास की घोषणा

मेरे विरूद्ध कोई भी शस्त्र न चलेगा और हर ज़ुबान जो मेरे विरूद्ध जाँचेगी, उसे मैं नाकांरता/धुतकारतां हूँ। प्रभु का सेवक होने के नाते यही मेरी परंपरा है, और मेरी धार्मिकता सिर्फ़ तुम्ही से है, ओ मेरे सेनाओं के प्रभु।

जिन लोगों ने मेरे विरूद्ध बातें की है / प्रार्थना की है / या मुझे हानि पहुँचाने की कोशिष की है, या मुझे नाकारा है, मैं उन्हें क्षमा करता हूँ (लोगों के नाम लो अगर आप उन्हें जानते हैं) उन्हें क्षमा करते हुए, प्रभु के नाम में मैं उन्हें आशिष भी देता हूँ।
(मत्ती ५: ४३-४५, रोमियों १२:१४)

अब मैं घोषित करता हूँ प्रभु कि आप और सिर्फ़ आप ही मेरे परमेश्वर है और आपके अलावा और कोई नहीं है। एक न्यायी परमेश्वर और उद्धारकरता, पिता, पुत्र और आत्मा और मैं आपकी आराधना करता हूँ।

मैं आज आपके सामने, एक नई तरीके से, बिना किसी शर्त के आज्ञाकारी बनकर आत्मसमर्पण करता हूँ। आत्मसर्मपित होते हुए, मैं आपके वचन के अनुसार चलूँगा।

मैं शैतान को नाकारता हूँ। उसके तनाव देने वाले सारे कार्यों को उसके आक्रमण को, उसके ढ़ोंगी कार्य / कोई भी यन्त्र जो वह मेरे विरूद्ध इस्तेमाल करना चाहता है। मैं उसके सामने आत्मसमर्पण नहीं करता, मैं उन्हें नाकारता हूँ, मुझसे दूर भगा देता हूँ, अलग कर देता हूँ, यीशु के नाम से आमीन। खास करके मैं धुतकारता हूँ, ठुकराता हूँ- अधर्म के कामों को, किटाणों को, दर्द को, सूजन को, हानि पहुँचाने वाली चीजों को, शरीर से विरोधी (रोकनेवाली) चीजों को, हर तरह के जादूटोने को और हर तरह के तनाव को (नाम लो उस दुष्ट आत्मा या बीमारी को जो आपको लगती है आपके विरूद्ध है)।

अंत में प्रभु मैं धन्यवाद देता हूँ कि यीशु के क्रूस पर बलिदान देने से मैं सारे शापों से मुक्त हो चुका हूँ और अब अब्राहम की आशिषों में प्रवेश कर चुका हूँ, जिनको आपने ये सारी आशिषों से भर दिया: **प्रशंसा, स्वास्थ्य, उत्पादन, सफलता, विजय, परमेश्वर की सहायता और उसकी दोस्ती।**
(गलातियों ३:१३-१४, उत्पति २४:१)

घोषणा के क्षेत्र

- **प्रभु का डर**
- **धार्मिकता और पवित्रता**
- **स्वास्थ्य और शक्ति**
- **सहायता, सुरक्षा, बचाव**
- **लोगों के कार्यों में परमेश्वर का हाथ**
- **परीक्षा**
- **आत्मिक युद्ध**
- **पूर्ण रूप से मुक्ति**
- **मानसिक/भावनाओं में स्थिर रहना**
- **परमेश्वर की सेवा**

कुछ समय बाद आप दूसरे वचनों पर मनन कर सकते हैं, जो पवित्र आत्मा आपसे कहता है, या आपके पढ़ते समय जीवित करेगा। (खास आप ही के लिये)

मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपको परमेश्वर का जीवित वचन विजय और हार में अंतर बतायेगा। और आपका जीवन प्रकाशित करेगा।

अपना हृदय तैयार करो

याद करो यशायाह ६६:२

''परंतु मैं उसी की ओर दृष्टि करूँगा जो दीन और खेदित मन का हो और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो।''

एक नम्र हृदय या बरताव हर वक़्त तैयारी के लिए अच्छा है। अगर हमें प्रभु की आवाज सुननी है, घोषणा के वक़्त हमें समय बनाना होगा आत्मिक शांतता के लिए। ये तुरंत ही नहीं होगा लेकिन जैसे हम हर रोज इस दुनिया के वातावरण से अलग होकर समय निकालते हैं और प्रभु की बाट जोहते हैं, हम प्रभु की आवाज़ को पहचानने के लिए सीखेंगे। (जो ज़्यादातर एक स्थिर चोटी सी हल्की-सी आवाज़ होगी)

(१ राजा १९:११-१३) इस तरह हम जान लेंगे कि हमें किन किन स्थितियों में कौनसी घोषणा करनी है ताकि परमेश्वर इन स्थितियों में कार्य करें।

मनन करना/ध्यान लगाना

क्या ही धन्य है वह पुरूष जो दृष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता और न ठट्टा करनेवालों की मण्डली में बैठता है।

परंतु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।

(भजन संहिता १:१-२)

इब्रानी शब्द ''हागा'' का मतलब मनन/ध्यान करना या पढ़ना ''मतलब किस तरह सावधानी से पढ़ना और उसका पालन करके अपने हृदय में रखना।'' जितना हम वचन पर ध्यान लगायेंगे, उतना ही हम इस पवित्र शास्त्र के लेखक को जान पायेंगे और हमारी सोच परमेश्वर की सोच से मिलती-जुलती रहेगी।

पवित्र आत्मा को आमंत्रण करें हमें वचन पर से ले जाने के लिए।

प्रभु यीशु ने साफ-साफ बताया है कि पिता परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को क्यों भेजा- ''परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब बाते सिखाएगा और जो कुछ भी मैंने तुम से कहा है वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।'' (यूहन्ना १४:२६)

जब प्रभु धरती पर थे तब उन्होंने बहुत सारी बातें अपने शिष्यों से कही जो उन्हें समझ में न आयी। लेकिन उन्होंने ये एहसास दिलाया कि जब पवित्र आत्मा उनके हृदय में आयेगा तो उन्हें सारी बातें समझायेगा और सिखायेगा भी जो प्रभु यीशु ने उन्हें पहले सिखायी थी। प्रभु यीशु ने यूहन्ना १६:१३ में हमें समझाया है,

''परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा।''

पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से पतरस ने कहा,

''अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा।'' (प्रेरितों २:१७)

जैसे ही पवित्र आत्मा शिष्यों के अंदर आया, एक चमत्कारिक रूप से वचन उनकी समझ में आया। सारे दबाव/शंका जो उनके मनों में थे वे एक साफ़ समझदारी में बदल गये, और आक्रमण के रूप से वचन का इस्तेमाल भी किया। आज भी परंपरा वही है, वचन और पवित्र आत्मा के साथ में चलना और एक शक्तिशाली संबंध बन जाना।

इफ़िसियों ६:१७ में पोलुस प्रभु के वचन को आत्मा की तलवार कहता है। इस वचन का सही आक्रमण हम यीशु की जिंदगी में देखते हैं जब रेगिस्तान में शैतान उनके पास में लालच में फँसाना चाहता था। तीन बार शैतान यीशु को लालच में फँसाना चाहता था, और तीनों बार यीशु ने उसे वही वचन दुहराया **''यह लिखा गया है''** और उसके बाद स्थिति के अनुसार वचन की घोषणा की।

प्रभु यीशु ने और कोई हथियार इस्तेमाल नहीं किया, सिवाय प्रभु के जीवित वचन का। हर यहुदी की तरह, प्रभु यीशु ने वचन के लंबे वाक्यों पर मनन किया था। जब शैतान ने उनपर आक्रमण किया, तब यीशु को किसी पुस्तक या पुस्तकालय में जाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। उन्होंने पहले से ही सारे वचनों पर मनन किया था।

आज भी यही शस्त्र- आत्मा की तलवार हमारे इस्तेमाल के लिये मौजूद है। हम पवित्र आत्मा पर भरोसा कर सकते हैं, ये जानने के लिये कि क्या मनन करना/ध्यान करना है, ताकि हम सही घोषणा सही स्थिति में करे और इसी तरह परमेश्वर की विजय में चलना सीखें।

घोषणा- अधिकार के साथ

घोषणाओं को बार-बार दुहराने से सिर्फ़ मनन ही नहीं होता बल्कि विश्वास भी बढ़ जाता है।

''विश्वास सुनने से आता है और सुनना परमेश्वर के वचन से आता है।''
(रोमियों १०:१७)

इन घोषणाओं को पूरे अधिकार के साथ और आत्मा के अभिषेक के साथ दुहराएँ।

यह एक बहुत ही शक्तिशाली और तेज़ हत्यार है।

''क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और प्राण और आत्मा को और गाँठ-गाँठ और गूंदे गूंदे को अलग करके आर-पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है।''
(इब्रानियों ४:१२)

क्या आपने अपने आप से कभी पूछा है परमेश्वर ने मुझे यह ज़ुबान क्यों दी है? हम इसे किस तरह प्रभु के मकसदों के लिए इस्तेमाल करें?

पुराने नियम में दाऊद कहता है,

भजन संहिता १६:८-९

''मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है, इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है, मैं कभी न डगमगाऊँगा। इस कारण मेरा हृदय आनंदित और मेरी आत्मा मगन हुई, मेरा शरीर भी चैन से रहेगा।''

पेन्तिकुस्त के दिन जब परमेश्वर की आत्मा उतरी और भीड़ जमा हुई, ये जानने के लिये कि क्या हुआ है, परतरस ने अपना जाना माना प्रचार शुरू किया। उन्होंने यीशु की ज़िंदगी में जो कुछ भी हुआ मरण से लेकर पुनरूत्थान तक बताया। हमारी ज़ुबान ही हमारी महिमा है। आप पूछेंगे क्यों?

इसलिये कि सृष्टिकरता ने हम सबको एक ज़ुबान दी है- उसकी महिमा के लिये। हमारी ज़ुबानों का कारण एक ही है, कि आप और मैं उसके द्वारा परमेश्वर को महिमा दें। इसलिये हमारी ज़ुबाने हमारी महिमा बन जाती है। ये शरीर का वह महत्त्वपूर्ण अंग है (सारे अंगों में) जिससे कि हम अपने सृष्टिकर्ता को महिमा दें।

मरण और जीवन हमारी ज़ुबान के सामर्थ्य में है

पुराने नियम में गिनती का जो पुस्तक है (१३ और १४) इसमें साफ़ लिखा है, कि जिन लोगों ने नकारात्मक बातें की उन्होंने मृत्यु पाया पर जिसने भी सकारात्मक रूप से बातें की उन्हें जीवन मिला। उन्होंने अपना भविष्य अपनी ही ज़ुबानों के ज़रिये चुना। जिन्होंने कहा ''हम नहीं कर पायेंगे'' नहीं कर पाये। और जिन्होंने कहा ''हम कर सकते हैं'' कर पाये। हमारा भविष्य जो है हमारी ज़ुबानों पर निर्भर है।

१) इसलिये जबकि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है, तो हमें डरना चाहिए, ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन इससे वंचित रह जाए।

२) क्योंकि हमें उन्हीं की तरह सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ, क्योंकि सुननेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा। (इब्रानियों ४:१-२)

इसलिये हम देखते हैं कि जुबान का सही इस्तेमाल करना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

घोषणा कब करते हैं?

शुरूवात में हर रोज समय निकाले। घोषणा करना एक आदत होनी चाहिए।

पवित्र आत्मा के उत्तेजन पर हम कभी भी घोषणा कर सकते हैं।

''परंतु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ भी मैंने तुम से कहा है वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।'' (यूहन्ना १४:२६)

पवित्र आत्मा जो है, सत्य और विश्वास की आत्मा है। आत्मा जब हमें उत्सुक करता है वह हमें उत्तेजित करके हमारे भाषण और शब्दों को प्रोत्साहित करता है। वह हमें सकारात्मक बनाता है।

हमारा शब्द जो हैं फिर आदर और परमेश्वर की आशिष लेकर निकलता है।

घोषणा करने की अनेक स्थितियाँ - जहाँ पर परमेश्वर का वचन घोषित किया जाता है।

हमारी व्यक्तिगत प्रार्थना के समय

- सबेरे उठने पर
- परमेश्वर की अच्छाई और सुरक्षा की घोषणा
- स्वास्थ्य और शक्ति के लिए प्रार्थना करना
- परिवार के साथ प्रार्थना करते वक़्त

- भोजन के पहले
- परेशानी में/दु:ख होने पर
- हमारी व्यक्तिगत ज़रूरतों के वक़्त
- परमेश्वर की सहायता खोजने पर
- रात को सोने से पहले

आत्मिक युद्ध के वक़्त

- व्यक्तिगत विनंती प्रार्थना के वक़्त
- जब हम नीचा महसूस करते हैं
- हमारी कठिन परीक्षाओं के समय
- व्यक्तिगत या पारिवारिक बीमारियों के समय
- हमारे विश्वास को बढ़ाने के लिए
- प्रार्थना में बंधनों को तोड़ते वक़्त
- शत्रु पर अधिकार लेते वक़्त
- मुक्ति दिलाने के लिए (दुष्टात्माओं से)
- झुंड में विनंती प्रार्थना करते वक़्त
- स्तुति और आराधना के वक़्त
- कठिन राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय परिस्थितियों में
- प्रार्थना सभा – कलीसियाओं, घर या दफ्तर में
    - दफ्तर को प्रभु के चरणों में अर्पण करते हुए
    - घर को प्रभु के चरणों में अर्पण करते वक़्त
    - बच्चे को प्रभु के चरणों में अर्पण करते वक़्त
    - लोगों के कार्यों में प्रभु की संगती खोजते वक़्त

घोषणाएँ

प्रभु का भय

१) देख सावधान हो, प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है, और बुराई से दूर रहना यही समझ है।
(अय्यूब २८:२८)

२) परन्तु हे यहोवा, मैंने तो तुझी पर भरोसा रखा है,
मैंने कहा ''तू मेरा परमेश्वर है''
मेरे दिन तेरे हाथ में है,
आहा तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तूने अपने डरवैयों के लिये रख छोड़ी है, और अपने शरणागतों के लिये मनुष्य के सामने प्रगट भी की है।
तू उनको अपने मण्डप में आरोप लगाने वाली जुबानों से छिपा रखेगा।
(भजन संहिता ३१:१४-१५, १९-२०)

३) बुद्धि का मूल यहोवा का भय है, जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं उनकी बुद्धि अच्छी होती है। उसकी स्तुति सदा बनी रहेगी।
(भजन संहिता १११:१०)

४) हे मेरे पुत्र यदि तू मेरे वचन ग्रहण करें और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े, और बुद्धि की बात ध्यान से सुने और समझ की बात मन लगाकर सोचे, और प्रविणता और समझ के लिये अति यत्न से पुकारे और उसको चांदी के समान ढूंढ़े और गुप्त धन की तरह उसकी खोज में लगा रहे, तो तू यहोवा के भय को समझेगा और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा।
(नीतिवचन २:१-५)

५) यहोवा का भय मानना बुद्धि की शुरूवात है, लेकिन मूर्ख लोग बुद्धि और शिक्षा को तुच्छ जानते हैं।
(नीतिवचन १:७)

६) यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है।
घमण्ड, अहंकार और बुरी चाल से और उलट फेर की बात से भी मैं बैर रखता हूँ।
(नीतिवचन ८:१३)

७) यहोवा के भय माननेवाले के पास एक सुरक्षित गढ़ है, और उसके पुत्रों को शरणस्थान मिलता है। यहोवा का भय मानना, जीवन का सोता है और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दों से बच जाते हैं।
(नीतिवचन १४:२६-२७)

८) हे मेरे बच्चों, आओ मेरी सुनो, मैं तुम को यहोवा का भय मानना सिखाऊँगा। वह कौनसा मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता है और लम्बी आयु चाहता है, ताकि भलाई देखे-? अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने मुँह की चौकसी कर कि इससे छल की बात न निकले।
बुराई को छोड़ और भलाई कर, शांति को ढूँढ़ और उसी का पीछा कर।
(भजन संहिता ३४: ११-१४)

९) यहोवा का भय मानने से जीवन बढ़ता है और वह संतुष्ट रहकर उसपर कोई भी विपत्ति नहीं आती।
(नीतिवचन १९:२३)

१०) नम्रता और यहोवा के भय मानने का फल, धन, महिमा और जीवन होता है।
(नीतिवचन २२:४)

११) यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरंभ है और परम पवित्र ईश्वर को मानना ही समझ है। मेरे द्वारा तेरी आयु बढ़ेगी और तेरे जीवन के वर्ष अधिक होंगे।
(नीतिवचन ९:१०-११)

धार्मिकता और पवित्रता

१२) इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए हैं, तो आओ हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।

और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर देखते रहें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दु:ख सहा और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा।

(इब्रानियों १२:१-२)

लेकिन तुम सिय्योन पर्वत के पास आये हो, स्वर्गीय यरूशलेम के पास जीवित परमेश्वर का शहर हजारों के उपर हजारों स्वर्गदूतों की सभा में आये हो पहिलौठों की सभा में, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं।

तुम आये हो सबके न्यायी परमेश्वर के पास, सिद्ध किये हुए धर्मियों की आत्माओं और नयी वाचा के मध्यस्थ यीशु और छिड़काव के उस लहू के पास आए हो जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है।

(इब्रानियों १२:२२-२४)

१३) मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए। यहाँ तक कि तुम उत्तम से उत्तम बातों को प्रिय जानो, और मसीह के दिन तक सच्चे बने रहो और ठोकर न खाओ, और उस धार्मिकता के फल से जो यीशु मसीह के द्वारा होते हैं, भरपूर होते जाओ जिससे परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे।

(फिलिप्पियों १:९-११)

१४) अपनी भूलचूक को कौन समझ सकता है? मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर। तू अपने दास को मालूम होनेवाले पापों से भी बचाए रख,
वे मुझपर प्रभुता करने न पाएँ,
तब मैं बिना दोष के रहूँगा,
और बड़े अपराधों से बचा रहूँगा।
मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हो,
हे यहोवा परमेश्वर मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले।

(भजन संहिता १९:१२-१४)

१५) यह हमारी प्रार्थना है:

हम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाएँ, ताकि हमारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो और हम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे और हम परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाये।

उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ्य से बलवन्त होते जाये यहाँ तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सकें, और पिता का धन्यवाद करते रहो जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ सहभागी हो।

उसी ने हमें अन्धकार के वश से मुक्त करके अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया, जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

(कुलुस्सियों १:९-१४)

१६) अब शान्ति का परमेश्वर खुद ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करें और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु के आने तक पूरे करे और निर्दोष सुरक्षित रहे। तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है और वह ऐसा ही करेगा।

(१ थिस्सलुनीकियो ५:२३-२४)

१७) क्या ही धन्य है वह पुरूष जो दृष्टों की युक्ति पर नहीं चलता,

और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता, और न ठट्टा करनेवालों की मण्डली में बैठता है परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता,

और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।

वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है और अपने मौसम में फलता है।

और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं इसलिये जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।

(भजन संहिता १:१-३)

१८) क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता है जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है ''मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूँ और उसके संग रहता हूँ जो खेदित और नम्र है, कि नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूँ।''

(यशायाह ५७:१५)

परंतु मैं उसी की ओर दृष्टि करूँगा जो दीन और खेदित मन का हो और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो।
(यशायाह ६६:२)

१९. परन्तु वह समय आता है वरन् अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है।
परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।
(यूहन्ना ४:२३-२४)

२०. क्योंकि परमेश्वर का यह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएँ और इस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीहकी महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहे।
जिसने अपने आप को हमारे लिये दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो।
(तीतुस २:११-१४)

२१. इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं के समान जो पवित्र और प्रिय है, बड़ी करूणा और भलाई और दीनता और नम्रता और सहनशीलता धारण करो।
(कुलुस्सियों ३:१२)

२२. और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो तो एक दूसरे को सह लो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।
(कुलुस्सियों ३:१३)

२३. मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओं और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।
(कुलुस्सियों ३:१६)

२४. वचन में या कार्य में जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।
(कुलुस्सियों ३:१७)

२५. हे प्रियो हम आपस में प्रेम करें क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है। जो कोई प्रेम करता है वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं करता वह परमेश्वर को नहीं जानता क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।
(१ यूहन्ना ४:७-८)

२६. जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ।
(१ यूहन्ना ४:९)

२७. प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया पर इस में हैं कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा। हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।
(१ यूहन्ना ४:१०-११)

२८. जो प्रेम परमेश्वर हमसे करता है उसको हम जान गए और हमें उस प्रेम का विश्वास है। परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है और परमेश्वर उसमें बना रहता है।
(१ यूहन्ना ४:१६)

२९. धन्य है वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
धन्य है वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे।
धन्य है वे जो नम्र है, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
धन्य है वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।
धन्य है वे जो दयावान है, क्योंकि उनपर दया की जायेगी।
धन्य है वे जिनके मन शुद्ध है, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
धन्य है वे जो मेल करने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
धन्य है वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें और सताएँ और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरूद्ध सब प्रकार की बूरी बातें करें, तब आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है।
(मत्ती ५:३-१२)

३०. भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं वरन उन सबको भी जो उसके प्रगट होने की राह देखते हैं।
(२ तीमुथियुस ४:८)

आरोग्य/स्वास्थ्य और शक्ति

३१. क्या तुम नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सिरजनहार है, वह न थकता न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अगम है।
वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ्य देता है।
तरुण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं, परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।
(यशायाह ४०:२८-३१)

३२. तेरा अनुग्रह मेरे लिये बहुत है, क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ तभी बलवन्त होता हूँ। (२ कुरिन्थियों १२:९-१०)

३३. धर्मी लोग खजूर के वृक्ष के समान फूले फलेंगे और लबानोन के देवदार के समान बढ़ते रहेंगे।
वे यहोवा के भवन में रोपे जाकर हमारे परमेश्वर के आँगनों में फूले फलेंगे।
वे बूढ़े होने पर भी फलते रहेंगे, और ताज़े और हरे भरे रहेंगे,
यह घोषित करते हुए कि यहोवा सच्चा है वह मेरी चट्टान है और उसमें कोई भी अधर्म नहीं।
(भजन संहिता ९२:१२-१५)

३४. मैं तो निरन्तर आशा लगाएँ रहूँगा और तेरी स्तुति अधिकाधिक करता जाऊँगा।
मैं अपने मुँह से तेरे धर्म का और तेरे किए हुए उद्धार का वर्णन दिन भर करता रहूँगा भले उनका पूरा नाप मेरी समझ से परे है।
मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों को घोषित करता हुआ आऊँगा।
मैं केवल तेरे ही धर्म की चर्चा किया करूँगा, हे परमेश्वर तू तो मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है, और अब तक मैं तेरे आश्चर्य कर्मों को घोषित करता आया हूँ।
इसलिये हे परमेश्वर जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा और मेरे बाल पक जायेंगे, तब भी तू मुझे न छोड़ जब तक मैं आनेवाली पीढ़ी के लोगों को तेरा बाहुबल और सब को तेरा सामर्थ्य न सुनाऊँ।
(भजन संहिता ७१:१४-१८)

३५. जो मुझे सामर्थ्य देता है, उस में मैं सब कुछ कर सकता हूँ।
(फिलिप्पियों ४:१३)

३६. यहोवा अपने लोगों को बल देगा, वह अपने लोगों को शांति से आशीषित करेगा।
(भजन संहिता २९:११)

३७. हे परमेश्वर तू अपने पवित्र स्थानों में भययोग्य है,
इस्त्राएल का परमेश्वर ही अपने लोगों को सामर्थ्य और शक्ति देता है। परमेश्वर की स्तुति हो।
(भजन संहिता ६८:३५)

३८. हे मेरे पुत्र ये बातें तेरी दृष्टि से हट न जाएँ खरी बुद्धि और विवेक की रक्षा कर, तब इन से तुझे जीवन मिलेगा, और ये तेरे गले का हार बनेंगे।
तब तू अपने मार्ग पर निडर चलेगा, और तेरे पाँव में ठेस न लगेगी। जब तू लेटेगा, तब भय न खाएगा। जब तू लेटेगा तब सुख की नींद आएगी। अचानक आनेवाले भय से न डरना, और जब दृष्टों पर विपत्ति आ पड़े तब न घबराना क्योंकि यहोवा तेरा आत्मविश्वास रहेगा, और तेरे पाँव को फ़न्दे में फँसने न देगा।
(नीतिवचन ३:२१-२६)

३९. हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान करके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा। इनको अपनी आँखों की दृष्टि से न हटाना वरन अपने हृदय में धारण कर।
क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती है, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती है।
सब से अधिक अपने हृदय की रक्षा कर क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है।
(नीतिवचन ४:२०-२३)

४०. प्रभु तो आत्मा है और जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहाँ मुक्ति है।
परन्तु हम सबके खुले चेहरे से प्रभु की महिमा / प्रताप इस प्रकार प्रगट होती है, जिस तरह दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है हम उसी तेजस्वी रूप में महिमा से महिमा तक बदलते जाते हैं।
(२ कुरिन्थियों ३:१७-१८)

मार्ग-प्रदर्शन, रक्षा और बचाव

४१. यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा, वह तेरे प्राणों की रक्षा करेगा।
यहोवा तेरे आने जाने में, तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक करता रहेगा।
उसका मार्ग कोई भी मांसाहारी पक्षी नहीं जानता और किसी गिद्ध की दृष्टि उस पर नहीं पड़ी।
उसपर घंमडी पशुओं ने पाँव नहीं रखा, और न उससे होकर कोई सिंह कभी गया है।
वह सब प्राणियों की आँखों से छिपी है और आकाश के पक्षियों के देखने में नहीं आती।
(भजन संहिता १२१:७-८, अय्यूब २८:७-८,२१)

४२. यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है, मैं किस से डरूँ?
यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊँ?
जब कुकर्मियों ने मुझ पर चढ़ाई की मुझे खा डालने के लिये, वे ही ठोकर खाकर गिर पड़े। चाहे सेना भी मेरे विरूद्ध छावनी डाले तो भी मैं न डरूँगा,
चाहे मेरे विरूद्ध लड़ाई ठन जाए उस दशा में भी मैं हिंयाव बाँधे निश्चित रहूँगा।
(भजन संहिता २७:१-३)

४३. यदि घर को यहोवा न बनाएँ तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा।
यदि नगर की रक्षा यहोवा न करें तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा।
(भजन संहिता १२७:१)

४४. तू अपनी समझ का सहारा न लेना वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
उसी को स्मरण करके सब काम करना तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।
अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना यहोवा का भय मानना और बुराई से अलग रहना,
ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा और तेरी हड्डियाँ पुष्ट रहेगी।
(नीतिवचन ३ : ५-८)

४५. व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे मुख से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है, उसके अनुसार करने की तू चौकसी करें, क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे और तू अच्छी कामयाबी पायेगा।

क्या मैंने तुझे आज्ञा नहीं दी? मज़बूत बन और धैर्य रख, डर मत, और तेरा मन कच्चा न हो, क्योंकि जहाँ-जहाँ तू जाएगा वहाँ-वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।
(यहोशू १:८-९)

४६. यहोवा भला है संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है और जो कोई उसपर भरोसा रखता है, वह उनकी परवाह करता है।
(नहूम १:७)

४७. परमेश्वर का मार्ग पूर्ण है (सिद्ध) यहोवा का वचन ताया हुआ है, वह अपने सब शरणागतों की ढाल है।
(भजन संहिता १८:३०)

४८. मैं मरूँगा नहीं वरन जीवित रहूँगा और परमेश्वर के कार्यों को घोषित करता रहूँगा।
(भजन संहिता ११८:१७)

४९. परमेश्वर के प्यार की वजह से हम मिट ना गए, क्योंकि उसकी महाकरूणा अमर है, प्रति सुबह वह नई होती है। मेरे मन ने कहा यहोवा मेरा भाग है इस कारण मैं उस में आशा रखूँगा।
जो यहोवा की बाट जोहते और उसके पास जाते हैं उनके लिये यहोवा भला है। यह अच्छा है कि हमारी आशा चुपचाप से प्रभु के उद्धार पर रहे।
(विलापगीत ३:२२-२६)

५०. जो विचार मैं तुम्हारे विषय करता हूँ, उन्हें मैं जानता हूँ वे हानि की नहीं वरन कुशल ही की है, ताकि मैं तुम्हें एक भविष्य और आशा दूँ।
(यिर्मयाह २९:११)

५१. परन्तु जितने तुझ पर भरोसा रखते हैं वे सब आनन्द करें,
वे सर्वदा ऊँचे स्वर से गाते रहे, क्योंकि तू उनकी रक्षा करता है और जो तेरे नाम के प्रेमी है तुझ में प्रफुल्लित हो,
क्योंकि तू धर्मी को आशिष देगा, हे यहोवा तू उसको अपने अनुग्रहरूपी ढाल से घेरे रहेगा।
(भजन संहिता ५:११-१२)

५२. हे याह क्या ही धन्य है वह पुरूष जिसको तू ताड़ना देता है, और अपनी व्यवस्था सिखाता है। क्योंकि तू उसको विपत्ति के दिनों में उस समय तक चैन देता रहता है, जब तक दृष्टों के लिये गड़हा नहीं खोदा जाता।
(भजन संहिता ९४:१२-१३)

५३. मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ तू परेशान मत हो क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ, मैं तुझे दृढ़ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूँगा।
(यशायाह ४१:१०)

५४. और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा और अपने स्वर्गीय राज्य में सुरक्षित पहुँचाएगा। उसी की महिमा युगानयुग होती रहे। आमीन।
(२ तीमुथियुस ४:१८)

५५. मुझे बड़ा धक्का दिया तो था, कि मैं गिर पड़ूँ परन्तु यहोवा ने मेरी सहायता की, परमेश्वर मेरा भल और भजन का विषय है, वह मेरा उद्धार ठहरा है।
धर्मियों के तम्बूओं में जय जयकार और उद्धार की ध्वनी हो रही है।
यहोवा के दाहिने हाथ ने बड़े महान काम किये हैं, यहोवा का दाहिना हाथ महान हुआ है। मैं न मरूँगा वरन् जीवित रहूँगा, और परमेश्वर के कामों का वर्णन करता रहूँगा। परमेश्वर ने मेरी बड़ी ताड़ना तो की है, परन्तु मुझे मृत्यु के वंश में नहीं किया। (भजन संहिता ११८:१३-१८)

परमेश्वर की उपस्थिति लोगों के कार्यों में

५६. परमेश्वर का नाम युगानयुग धन्य है, क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के है। समयों और मौसम को वही बदलता है।
राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है। बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवालों को समझ भी वही देता है।
वही गहराई की और गुप्त बातों को प्रकट करता है, वह जानता है कि अन्धियारे में क्या है और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है।
(दानिय्येल २:२०-२२)

५७. उसकी प्रभुता सदा की है और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहनेवाला है। पृथ्वी के सब रहनेवाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार कार्य करता है और कोई उसको रोककर यह नहीं कह सकता है ''तू ने यह क्या किया है?''
(दानिय्येल ४:३४-३५)

५८. क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।
क्योंकि हम परमेश्वर के कारीगरी है यीशु मसीह में बनाए हुए, अच्छे कर्मों के लिये, जो परमेश्वर ने पहले से ही हमें करने के लिये चुना है।
(इफ़िसियों २:८-१०)

५९. तू जो अपने दाहिने हाथ के द्वारा अपने शरणागतों को उनके विरोधियों से बचाता है अपनी अद्‌भुत करूणा दिखा।
अपनी आँखों की पुतली के समान सुरक्षित रख।
अपने पंखों के तले मुझे छिपा रख, उन दृष्टों से जो मुझ पर अत्याचार करते हैं, मेरे प्राण के शुत्रुओं से जो मुझे घेरे हुए हैं।
(भजन संहिता १७:७-९)

६०. हे प्रभु तुझ जैसा सामर्थी कोई नहीं कमज़ोरों के सामने, हे हमारे परमेश्वर हमारी सहायता कर, क्योंकि हमारा भरोसा तुझी पर है और तेरे नाम का भरोसा करके हम इस भीड़ के विरूद्ध आए हैं, हे यहोवा तू हमारा परमेश्वर है, मनुष्य तुझ पर प्रबल न होने पाए।
(२ इतिहास १४:११)

६१. हे हमारे पितरों के परमेश्वर क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति-जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता?
(२ इतिहास २०:६)

६२. यहोवा तो अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को न त्यागेगा, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपनी ही इच्छा से अपनी प्रजा बनाया है।
(१ समूएल १२:२२)

६३. सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरें, जगत के सब निवासी उसका भय माने। क्योंकि जब उसने कहा तब हो गया, जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया। यहोवा जाति-जाति की युक्ति को व्यर्थ कर देता है, वह देश देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है।
यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी, उसके मन की कल्पनाएँ पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेगी। क्या ही धन्य है वह जाति जिसका परमेश्वर यहोवा है और वह देश जिसे उसने अपना निज भाग होने के लिये चुन लिया है।
(भजन संहिता ३३:८-१२)

६४. हे पृथ्वी के सब नम्र लोगों, हे यहोवा के नियम के माननेवालों उसको ढूँढ़ते रहों, धार्मिकता को ढूँढ़ों, नम्रता को ढूँढ़ो, सम्भव है तुम यहोवा के क्रोध के दिन में शरण पाओ।
(सपन्याह २:३)

६५. हे प्रभु दुष्टों को गड़बड़ी में डाल और उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दें।
(भजन संहिता ५५:९)

६६. क्योंकि दृष्टों का राजदण्ड धर्मियों के धरती के भाग पर बना न रहेगा।
(भजन संहिता १२५:३)

परीक्षा और परखना

६७. परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। इसलिये हे मेरे प्रिय भाइयों दृढ़ और अटल रहो और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, यह जानते हुए कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है। (१ कुरिन्थियों १५:५७-५८)

६८. हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो जिसने यीशु मसीह को मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया।
(१ पतरस १:३)

६९. इस कारण तुम मगन होते ही, यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिये नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दु:ख में हो और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कहीं अधिक बहुमुल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे।
(१ पतरस १:६-७)

७०. हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ों तो इसको पूरे आनन्द की बात समझों यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे।
(याकूब १:२-४)

७१. मैं हर समय यहोवा का नाम ऊँचा उठाऊँगा। उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख पर रहेगी। मैं यहोवा पर घमण्ड करूँगा। नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित होंगे। मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो और आओ हम मिलकर उसके नाम को ऊँचा ऊठाएँ। मैं यहोवा के पास गया, तब उसने मेरी सुन ली और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया।
(भजनसंहिता ३४:१-४)

७२. यदि परमेश्वर हमारे साथ है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?
जिसने अपने एक मात्र पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सबके लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा? परमेश्वर के चुने हुओं पर

दोष कौन लगाएगा? फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीहा ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है।

कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या आकाल, या गरीबी, या जोखिम, या तलवार?

जैसा लिखा है ''तेरे लिए हम दिन भर घात किए जाते हैं, हम वध होनेवाली भेड़ों के समान गिने गए हैं'' परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर है। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊँचाई, न गहराई और न सृष्टि की कोई वस्तु हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।

(रोमियों ८:३१ब-३९)

७३. धन्य है वह पुरूष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो। वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के किनारे लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो, जब धूप होगी तब उसको न लगेगी, उसके पत्ते हरे रहेंगे और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा।

(यिर्मयाह १७:७-८)

७४. इसलिये परमेश्वर के अधीन हो जाओ, और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।

(याकूब ४:७)

आत्मिक युद्ध

७५. तेरे विरूद्ध कोई भी शस्त्र न चलेगा और हर एक ज़ुबान, जो तेरे विरूद्ध जाँचेगी, तू उसे हरायेगा।
परमेश्वर के दासों की यही परंपरा है और उनकी धार्मिकता मुझसे ही है कहता है प्रभु।
(यशायाह ५४:१७)

७६. हे यहोवा जो मेरे साथ मुकदमा लड़ते हैं उनके साथ तू भी मुकदमा लड़। जो मुझसे युद्ध करते हैं उनसे तू युद्ध कर।
ढाल और भाला लेकर मेरी सहायता करने को खड़ा हो, बर्छी को खींच और मेरा पीछा करनेवालो के सामने आकर उनको रोक, और मुझसे कह कि ''मैं तेरा उद्धार हूँ।''
(भजन संहिता ३५:१-३)

७७. यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं तो भी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं पर गढ़ों को नीचे उतारने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी है। इसलिये हम सारे वाद-विवाद, कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है खण्डन करते हैं, और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।
(२ कुरिन्थियों १०:३-५)

७८. वे मेमने के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर जयवन्त हुए और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना। यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली।
(प्रकाशितवाक्य १२:११)

७९. तेरे जूते लोहे और पीतल के होंगे, और जितने तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति होगी।
हे येशूरून ईश्वर के तुल्य और कोई नहीं है।
वह तेरी सहायता करने को आकाश पर और अपना प्रताप दिखाता हुआ, आकाशमण्डल पर सवार होकर चलता है।
अनंतकाल का परमेश्वर हमारा शरण स्थान है, और नीचे उसकी सनातन बाहें हैं।
(व्यवस्थाविवरण ३३:२५-२७)

८०. परमेश्वर घमंड का विरोध करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।
इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो जिसे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो क्योंकि वह तुम्हारी परवाह करता है। सचेत हो और जागते रहो क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।
विश्वास में दृढ़ होकर और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में है ऐसे ही दु:ख सह रहे है। अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दु:ख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। उसी का साम्राज्य युगानयुग रहे। आमीन।
(१ पतरस ५:७-११)

पूर्ण मुक्ति

८१. अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है,
उस एकमात्र परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा और गौरव और पराक्रम और अधिकार हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है अब भी हो और युगानयुग रहे। आमीन।
(यहूदा १:२४-२५)

८२. हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे,
और तुम्हारे मन की आँखे ज्योतिर्मय हो कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसके वारीस होने की महिमा का धन कैसा है, और उसकी सामर्थ्य हम में जो विश्वास करते है कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार जो उसने मसीह में किया, कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर बैठाया है।
(इफ़िसियों १:१७-२०)

८३. सब प्रकार की प्रधानता और अधिकार और सामर्थ्य और प्रभुता के और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जायेगा और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया,
और उसे सब वस्तुओं पर अधिकार देकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।
(इफ़िसियों १:२१-२३)

८४. मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के आने तक पूरा करेगा।
(फिलिप्पियों १:६)

८५. हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे।

हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह और उसके किसी उपकार को न भूलना। वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता और तेरे सब रोगों को चंगा करता है। वही तो तेरे प्राण को नष्ट होने से बचा लेता है,
और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बाँधता है। वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है,
जिससे तेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है।
(भजन संहिता १०३:१-५)

८६. अब जो मसीह यीशु में है उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं, क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से मुक्त कर दिया।
(रोमियों ८:१-२)

८७. क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किये जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है।
(इब्रानियों १०:१४)

८८. मसीह के क्रूस पर बलिदान के द्वारा मैंने शाप से होकर अब्राहम के आशिषों को पाया है जिसे परमेश्वर ने सारी चीजों से आशीषित किया।
(गलातियों ३:१३-१४)

८९. देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाऐ और हम है भी।
इस कारण संसार हमें नहीं जानता क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना। हे प्रियो अब हम परमेश्वर की सन्तान है और अभी तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे।
इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है,
और जो कोई उस पर यह आशा रखता है वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है।
(१ यूहन्ना ३:१-३)

९०. जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उसको हम जान गए और हमें उसका विश्वास है। परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है।
(१ यूहन्ना ४:१६)

९१. हम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।
(१ कुरिन्थियों ६:११)

९२. अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है, सनातन वाचा के लहू के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आया, तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो और जो कुछ उसको भाता है उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे। उसी की महिमा युगानयुग होती रहे। आमीन।
(इब्रानियों १३:२०-२१)

मानसिक और भावनाओं के संबंधित स्थिरता

९३. हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझसे सीखो क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।
(मत्ती ११:२८-३०)

९४. परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे ताकि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।
(रोमियों १५:१३)

९५. क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी है। इसलिये हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर के विरोध है खण्डन करते हैं। हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।
(२ कुरिन्थियों १०:४-५)

९६. तू मुझे पूर्ण शान्ति में रखेगा क्योंकि मेरा मन तुझ में धीरज धरा हुआ है, और मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ।
(यशायाह २६:३)

९७. मुझमें बड़ी शान्ति है क्योंकि मैं वचन से प्रेम रखता हूँ और मुझ को कोई ठोकर नहीं लगेगी।
(भजन संहिता ११९:१६५)

९८. किसी भी बात की चिन्ता मत करो परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन प्रार्थना और विनंती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। तब परमेश्वर की शान्ति जो सारी समझ से परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।
(फिलिप्पियों ४:६-७)

९९. इसलिये हे भाइयों जो जो बातें सत्य है और जो जो बातें आदरणीय है और जो जो बातें उचित है और जो जो बातें पवित्र है और जो जो बातें सुहावनी है, और जो जो बातें मनभावनी है अर्थात जो भी सद् गुण और प्रशंसा की बातें है इन पर ध्यान लगाया करो।
(फिलिप्पियों ४:८)

१००. क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।
(२ तीमुथियुस १:७)

परमेश्वर की सेवकाई

१०१. परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हमको जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है। क्योंकि हम परमेश्वर के निकट उद्धार पानेवालों और नाश होनेवालों दोनों के लिये मसीह की सुगन्ध है।

कुछ के लिये तो मरने के निमित्त मृत्यु की गन्ध और कितनों के लिये जीवन की सुगन्ध। क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं।

(२ कुरिन्थियों २:१४-१७)

१०२. परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह हमें बहुतायत से दे सकता है, जिससे हर बात में और हर समय सबकुछ जो तुम्हें आवश्यक हो तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।

(२ कुरिन्थियों ९:८)

१०३. और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा कि सब जातियों पर गवाही हो और तब अन्त आ जाएगा।

(मत्ती २४:१४)

१०४. जिस प्रकार से वर्षा और बर्फ़ आकाश से गिरते हैं और वहाँ यो ही लौट नहीं जाते वरन् भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं, जिससे बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है, वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा।

(यशायाह ५५:१०-११)

१०५. हियाव बाँध और दृढ़ होकर इस काम में लग जा। मत डर और तेरा मन कच्चा न हो क्योंकि यहोवा परमेश्वर जो मेरा परमेश्वर है वह तेरे संग है और जब तक यहोवा के भवन में जितना काम करना हो, तबतक वह न तो धोखा देगा और न तुझे त्यागेगा।

(१ इतिहास २८:२०)

१०६. जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, बलवन्त हो और जो कुछ करते हो प्रेम से करो।
(१ कुरिन्थियों १६:१३-१४)

१०७. मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।
(गलातियों २:२०)

१०८. पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओं, क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।
(कुलुस्सियों ३:२-४)

१०९. पर मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा और यदि वह पीछे हट जाएँ, तो मेरा मन उस से प्रसन्न न होगा, पर हम हटनेवाले नहीं कि नाश हो जाएँ पर विश्वास करनेवाले है कि प्राणों को बचाएँ।
(इब्रानियों १०:३८-३९)

११०. डरते और काँपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ, क्योंकि परमेश्वर ही है जो हमारे अंदर कार्य करता है, दोनों इच्छा और कार्यों के करने का प्रभाव डाला है।
सब काम बिना कुड़कुडाए और बिना विवाद के किया करो,
ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो,
जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो।
(फिलिप्पियों २:१२-१६)

१११. परन्तु जो बातें मेरे लाभ की थी, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ।
जिसके कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई और उन्हें कचरा समझता हूँ ताकि मैं मसीह को प्राप्त करूँ।

और उसमें पाया जाऊँ न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है।

ताकि मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ्य को और उसके साथ दु:खों में सहभागी होने के मर्म को जानू, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करू कि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहूँचूँ। यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूँ या सिद्ध हो चुका हूँ।

पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ,

जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई है उनको भूल कर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

(फिलिप्पियों ३:७-१४)

११२. अब परमेश्वर जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कही अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है।
(इफ़िसियों ३:२०)

११३. पर हे परमेश्वर के जन तू इन बातों से भाग और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम धीरज और नम्रता का पीछा कर।

विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ और उस अनन्त जीवन को धरले जिसके लिये तू बुलाया गया और बहुत से गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।

मैं तुझे परमेश्वर को जो सब को जीवित रखता और मसीह यीशु को गवाह करके जिसने पिलातुस के सामने अच्छा अंगीकार किया यह आज्ञा देता हूँ,

कि तू हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने तक इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष रख।

जिसे वह ठीक समय पर दिखाएगा, जो परमधन्य और एकमात्र अधिपति और राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है,

और अमरता केवल उसी की है और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है।

उसकी प्रतिष्ठा और राज्य युगानयुग रहेगा। आमीन।

(१ तीमुथियुस ६:११-२६)

क्रूस पर किया हुआ अदल-बदल

यीशु को दंड दिया गया ताकि मुझे क्षमा मिले।
(यशायाह ५३:४-५)

यीशु को घायल किया गया ताकि मुझे चंगाई मिले।
(यशायाह ५३:४-५)

यीशु मेरे लिये पाप बना मेरे पापों से ताकि मैं धर्मी बनू उसकी धार्मिकता से।
(यशायाह ५३:१०-११)

यीशु मेरी मौत मरा ताकि मैं अनंत जीवन पा सकूँ।
(इब्रानियों २:९)

यीशु मेरे लिये शाप बना ताकि मैं उसकी सारी आशिषें पा सकूँ।
(गलातियों ३:१३-१४)

यीशु मेरे लिये गरीब बना ताकि मैं उसका बहुतायक पा सकूँ।
(२ कुरिन्थियों ८:९, ९:८)

यीशु मेरे लिये लज्जित बना, ताकि मैं उसकी महिमा पा सकूँ।
(इब्रानियों १२:२, मत्ती २७: ३५-३६)

यीशु मेरे लिये अस्वीकार किया (धुतकारा) गया ताकि पिता परमेश्वर मुझे स्वीकार करें।
(मत्ती २७: ४६-५१, इफ़िसियों १:५-६)

यीशु को मरण से उठा लिया गया ताकि मैं परमेश्वर के साथ अनंतकाल तक जी सकूँ।
(यशायाह ५३:८, १ कुरिन्थियों ६:१७)

मेरे पुराने मनुष्यने यीशु में मौत पायी ताकि मुझमें वह नया आदमी जीवित हो जो प्रभु यीशु में है।
(रोमियों ६:६, कुलुस्सियों ३:९-१०)

यहोवा के छुड़ाए हुए ये कहें

मेरा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है, छुड़ाया हुआ, साफ़ किया हुआ, यीशु के खून में पवित्र किया हुआ।
(भजनसंहिता १०७:२, १ कुरिन्थियों ६:१९, इफ़िसियों १:७, १ यूहन्ना १:७, इब्रानियों १३:१२)

मेरे शरीर, बदन के जो सारे भाग है, धार्मिकता के औजार हैं, परमेश्वर की सेवकाई और उसकी महिमा के लिये।
(रोमियों ६:१३)

शैतान को मेरे अंदर कोई जगह नहीं है, कोई सामर्थ्य नहीं है और कोई भी बिना चुकाया हुआ कर्जा नहीं है।
प्रभु यीशु के खून ने सब कुछ चुका दिया है।
(रोमियों ३:२३-२५, ८:३३-३४)

मैं मेमने के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण शैतान पर जयवन्त हुआ हूँ और मैं अपने प्राण को प्रिय न जानूँ यहाँ तक कि मृत्यु भी सह पाऊँ।
(प्रकाशितवाक्य १२:११)

और कुछ नहीं सिर्फ़ यीशु का खून

मैं शैतान पर विजय पाता हूँ जब मैं परमेश्वर के वचन के अनुसार गवाही देता हूँ, कि यीशु के लहू ने मेरे लिये क्या किया है।
(प्रकाशितवाक्य १२:११)

प्रभु यीशु के खून से मैं शैतान के हाथों से मुक्त हो गया हूँ।
(इफ़िसियों १:७)

प्रभु यीशु के खून के द्वारा मेरे सारे पाप क्षमा किये गये हैं।
(१ यूहन्ना १:९)

प्रभु यीशु के खून के द्वारा मैं लगातार साफ़/पवित्र किये जा रहा हूँ।
(१ यहून्ना १:७)

प्रभु यीशु के खून के द्वारा मैं न्यायी और धर्मी बन गया हूँ, जैसे मैंने कोई पाप ही न किया हो।
(रोमियों ५:९)

प्रभु यीशु के खून में मैं साफ़, पवित्र किया हुआ परमेश्वर के लिये अलग किया गया हूँ।
(इब्रानियों १३:१२)

प्रभु यीशु के खून में मैं बलवन्त होकर परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकता हूँ।
(इब्रानियों १०:१९)

प्रभु यीशु का खून लगातार मेरे लिये रोता हुआ, स्वर्ग में परमेश्वर के सामने विनंती करता रहता है।
(इब्रानियों १२:२४)

परमेश्वर के चरण में आत्मविश्वास की घोषणा

कोई भी शस्त्र मेरे लिये, मेरे विरूद्ध बनाया हुआ नहीं चलेगा, और जो जुबान मेरे विरूद्ध जांचती है, उसे मैं अपराधी ठहराता हूँ।

यही मेरी परंपरा है, प्रभु का सेवक होने के नाते, और मेरी धार्मिकता सिर्फ़ तुझी में हैं, हे सेनाओं के प्रभु। अगर मेरे विरूद्ध कोई कुछ बोल रहे हैं या प्रार्थना कर रहे हैं या हानि पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं, या धुतकारते हैं, मैं उन्हें क्षमा करता हूँ। (नाम लेकर अगर जानते हो)

क्षमा करते हुए, मैं उन्हें प्रभु के नाम से आशिष देता हूँ।

अब मैं घोषित करता हूँ हे प्रभु, कि तू और केवल तू ही मेरा परमेश्वर है, और तेरे सिवा मेरा और कोई नहीं, एक न्यायी परमेश्वर, एक उद्धारकर्ता, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा और मैं आपकी वंदना करता हूँ।

आज मैं बिना किसी शर्त के आपके सामने अपने आपको आत्मसमर्पण करता हूँ।

आत्मसमर्पण करते हुए, प्रभु मैं आपके वचन के अनुसार चलता हूँ, मैं शैतान को नकारता हूँ, उसके सारे तनावों को, उसके आक्रमण को, उसकी चतुरता को, और हर एक औजार, या व्यक्ति, या चीज़ जो वह मेरे विरूद्ध कोशिष करता है।

मैं उसके सामने झुकूँगा नहीं, मैं उसे नकारता हूँ, हटा देता हूँ और मुझसे अलग करता हूँ, यीशु के नाम से।

खास करके मैं नकारता और धुतकारता हूँः कमज़ोरी को, रोगों को, दर्द को, सूजन या जलन, कोई खतरनाक बीमारी, किटाणू, हर एक प्रकार का जादूटोना, और हर एक प्रकार का तनाव (अपनी कोई भी बीमारी या आपके विरूद्ध जो दुष्ट आत्मा है यहाँ पर स्पष्टिकरण करें)

अंत में प्रभु मैं धन्यवाद देता हूँ कि यीशु के क्रूस पर बलिदान के कारण, मैं श्रापों से हटकर, अब्राहम की आशिषों में प्रवेश कर चुका हूँ, जिसको आपने सारी आशिषें दी थी। प्रशंसा, स्वास्थ्य, पुनरूत्पादन, बढ़ौती, विजय, परमेश्वर का संग और परमेश्वर की दोस्ती। (मत्ती ५:४३-४५, रोमियों १२:१४, गलातियों ३:१३-१४, उत्पत्ति २४:१)

अनेक घोषणाएँ
अलग-अलग स्थितियों के लिये

मानसिक तनाव पर विजय पाने की घोषणा

हे परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह के नाम में और आपके वचन के अनुसार मुझे तनाव की आत्मा से मुक्ति दिला दे।
(योएल २:३२, यशायाह ६१:३)

धन्यवाद प्रभु मेरे जीवन में सभी चीजें मेरे अच्छाई के लिये कार्य करेगी, क्योंकि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ और आपके अच्छे मकसंद के अनुसार बुलाया गया हूँ।
(रोमियों ८:२८)

मेरे हर एक विचार को प्रभु यीशु मसीह के नाम में बांध देता हूँ और इन्हीं विचारों को परमेश्वर के वचन के अधीन बना देता हूँ मैं उद्धार का कवच पहनता हूँ।
(२ कुरिन्थियों १०:५, १ थिस्सलुनीकियों ५:८)

अब, हे आशा के महान परमेश्वर तेरी शांति और आनंद से भर दे, ये विश्वास रखते हुए कि तेरे पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से मैं आशा में भरपूरी पाऊँ / बढ़ता जाऊँ।
(रोमियों १५:१३)

हे पवित्र आत्मा सच्चाई में मेरी अगुवाई कर और शैतान के सारे झूठ से मुक्ति दिला दे।
(यूहन्ना १६:१३, यूहन्ना ८:४४, मत्ती ६:१३)

हे प्रभु इस संसार के तौर तरीकों से मुझे दूर रख और मेरे मन को नया बना दे ताकि मैं तेरी इच्छा और मकसद मेरे जीवन में जान सकूँ।
(रोमियों १२:२)

धन्यवाद पिता, यीशु के नाम में आमीन।

मेरा परमेश्वर मेरे लिये प्रबन्ध करता है

तुम यहोवा यीरे हो, मेरा परमेश्वर जो मेरी सारी ज़रूरतों का प्रबन्ध करता है, मैं कबुल करता हूँ कि मुझे कोई घटी नहीं, तेरा अनुग्रह मेरे लिये काफ़ी है।
(उत्पत्ति २२:१४, भजन संहिता २३:१, २ कुरिन्थियों १२:९)

मैं चिंता नहीं करता, क्योंकि तू मेरा पिता मेरी परवाह करता है, तुझे पता है कि मेरी ज़रूरत क्या है, मेरे बोलने से पहले ही तू उत्तर देगा।
(मत्ती ६:२५, १ पतरस ५:७, यशायाह ६५:२४)

मुझे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह पता है, कि भले ही वह अमीर था फिर भी मेरे लिये वह गरीब बना, ताकि उसकी गरीबी से मैं अमीर बन जाऊँ।
(२ कुरिन्थियों ८:९)

मेरा परमेश्वर मेरी सारी ज़रूरतें पूरी करेगा, उसकी महिमा के अनुसार प्रभु यीशु मसीह में
(फिलिप्पियों ४:१९)

जो आपके नाम को जानते हैं, वे तुझपर भरोसा रखेंगें क्योंकि हे प्रभु, जो तुझे ढूँढ़ते है तू उसे कभी नहीं त्यागेगा।
(भजन संहिता ९:१०)

प्रभु यीशु में मैं सबकुछ कर सकता हूँ

महान है परमेश्वर और महान उसका सामर्थ्य, इसीलिये मैं प्रभु के महान सामर्थ्य में मज़बूत हूँ।
(भजन संहिता १४७:५, इफ़िसियों ६:१०)

मेरा प्रभु मुझे सिर बनाकर ऊँचाई पर रखेगा, पूँछ बनाकर नहीं। अगर मैं प्रभु की आज्ञाओं का पालन सावधानी से करूँगा, मैं हर वक़्त ऊपर, बल्कि नीचा न रहूँगा। मैं प्रभु यीशु में सबकुछ कर सकता हूँ, जो मुझे ताकत देता है।
(व्यवस्थाविवरण २८:१३, फिलिप्पियों ४:१३)

जिसने मुझे बुलाया है, वह विश्वास योग्य है और वह करके बतायेगा, मैं प्रभु पर भरोसा रखता हूँ, मैं उस वृक्ष के समान हूँ, जो पानी (जल) के किनारे है, मेरे पत्ते हर वक़्त हरे रहेंगे, आकाल के समय मुझे कोई चिंता नहीं और कभी भी फल बोने से नहीं चूकता। मैं जहाँ पर भी हाथ डालता हूँ बढ़ौती करता हूँ।
(१ थिस्सलुनीकियों ५:२४, यिर्मयाह १७:७,८, भजन संहिता १:३)

परमेश्वर मेरे आगे चलकर मेरी अगुवाई करता है ताकि मैं दिन और रात चलता रहूँ। मेरे परमेश्वर के साथ मैं हर दिवार कूद सकता हूँ।
(निर्गमन १३:२१, भजन संहिता १८:२९)

क्योंकि मैं प्रभु यीशु पर विश्वास करता हूँ, सबकुछ संभव है।
(मरकुस ९:२३)

लेकिन धन्यवाद हो परमेश्वर का, जो मुझे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विजय दिलाता है।
(१ कुरिन्थियों १५:५७)

सारे कष्टों, भावनाओं से जीतने के लिये

मेरा बदन (शरीर) पवित्र आत्मा का मंदिर है, मुक्त किया हुआ, पवित्र किया हुआ और साफ़ किया हुआ यीशु के खून (लहू) के द्वारा।
(१ कुरिन्थियों ६:१९, इफ़िसियों १:७, भजन संहिता १०७:२, १ यूहन्ना १:७, इब्रानियों १३:१२)

मेरे अंग के भाग, धार्मिकता के औजार है, परमेश्वर की सेवा के लिये, और उसकी महिमा के लिये।
(रोमियों ६:१३)

शैतान को मेरे अंदर या मेरे ऊपर कोई जगह नहीं, कोई सामर्थ्य नहीं, कोई भी बिना सुलजाये हुए दावें नहीं, सब कुछ प्रभु यीशु मसीह के खून से सुलजाया गया है।
(रोमियों ८:३३-३४)

मैं यीशु के खून के द्वारा, और वचन के गवाही के द्वारा शैतान के ऊपर विजय पा चुका हूँ, और मौत से भी भय नहीं रखता हूँ।
(प्रकाशितवाक्य १२:११)

मेरा शरीर प्रभु के लिये है, और प्रभु मेरे शरीर के लिये है।
(१ कुरिन्थियों ६:१३)

एक अच्छे बेहतरीन जीवन के लिये

अगर मेरी प्रजा के लोग जो मेरे नाम से बुलाये गये हैं, नम्र बनें, और प्रार्थना करें, और मेरे चेहरे को खोजकर अपनी बुरी चालों से फिरे, तब मैं स्वर्ग से सुनुंगा, उनके पापों को क्षमा करके उनके देश को चंगाई दूँगा।
क्योंकि यही है वह राज: यीशु तुम्हारे अंदर वास करता है, और यही हमारा दिलासा है कि तुम उसकी महिमा में भाग लोगे।
(२ इतिहास ७:१४, कुलुस्सियों १:२७)

सिर्फ़ प्रभु यीशु ही पर विश्वास करके...

मैं घमंड को त्यागकर यीशु की नम्रता को गले लगाता हूँ।
(याकूब ४:६)
मैं दूसरों के प्रति जलन को त्यागकर यीशु की संतुष्टता को अपनाता हूँ।
(सभोपदेशक ४:४, १ तीमुथियुस ६:६)
मैं लोभ/लालच को त्यागकर यीशु की उदारता को अपनाता हूँ, जो मेरे अंदर है।
(इफ़िसियों ५:५, नीतिवचन २१:२६)
मैं पेटूपन को त्यागकर प्रभु यीशु के सीधेपन को अपनाता हूँ, जो मेरे अंदर है।
(नीतिवचन २३:२०-२१, फिलिप्पियों ४:१२)
मैं हवस को त्यागकर, यीशु की पवित्रता को अपनाता हूँ, जो मेरे अंदर है।
(अयूब ३१:१, मत्ती ५:६)
मैं गुस्से को त्यागकर प्रभु यीशु की दया को अपनाता हूँ, जो मेरे अंदर है।
(नीतिवचन १५:१, १९:११, १ कुरिन्थियों १३:४)
मैं आलस्य को त्यागकर यीशु की सेवकाई को अपनाता हूँ, जो मेरे अंदर है।
(रोमियों १२:११)
मैं गपशप या दूसरों की बदनामी को त्यागकर प्रभु यीशु की आशिष को अपनाता हूँ, जो मेरे जरिये दूसरों को मिलती है।
(लेव्यव्यवस्था १९:१६, १ कुरिन्थियों ४:१२)

एक पवित्र जीवन के लिये

मेरे जीवन को मैं पवित्र कैसे रख सकता हूँ? परमेश्वर के जीवित वचन पर रहने से।
(भजन संहिता ११९:९-११)

हे परमेश्वर मेरे अंदर शुद्ध हृदय उत्पन्न कर और भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर। (भजन संहिता ५१:१०)

मुझे धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर।
(भजन संहिता ५१:२)

मैंने अपनी आँखों से एक वाचा बाँधी है, कि किसी स्त्री पर नज़र न डालूँगा।
(अय्यूब ३१:१)

अगर तेरी आँख पाप करवाती है, उसे निकालकर बाहर फेंक दे।
(मत्ती १८:९)

जब अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।
(याकूब १:१५)

मैं व्यभिचार से दूर भागकर जीवन को अपनाता हूँ, ताकि मैं और मेरे बच्चे जीवित रहे।
(१ कुरिन्थियों ६:१८, व्यवस्थाविवरण ३०:१९)

मेरा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है, जो मुझ में बसा है, और मैं अपना नहीं हूँ।
(१ कुरिन्थियों ६:१९)

हे परमेश्वर मुझे जाँचकर जान ले, मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान लें।
और देख कि मुझमें कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर।
(भजन संहिता १३९:२३,२४)

पवित्र आत्मा कौन है?

मुझे परमेश्वर के आत्मा ने बनाया है, उसी महान परमेश्वर की साँस से जीवन मिलता है।
(अय्यूब ३३:४)

तू सत्य का आत्मा है, तू मेरा सलाहकार है।
(यूहन्ना १६:१३, १४:१६, १७)

तू प्रभू की आत्मा है, तू समझदारी और बुद्धि की आत्मा है, सलाह और सामर्थ्य की आत्मा, ज्ञान की आत्मा और प्रभु के भय की आत्मा है।
(यशायाह ११:२)

तू अनुग्रह और प्रार्थना सिखानेवाली आत्मा है और मेरे वारिस होने की जमानत है।
(जकर्याह १२:१०, इफ़िसियों १:१४)

मन को आत्मा के जरीये नियंत्रण में रखना ही जीवन और शांति है, तू मुझे विश्राम देता है।
(रोमियों ८:६, यशायाह ६३:१४)

तू सबकुछ ढूँढ़ता है, परमेश्वर की गहराई की चीजों को भी, और हर वक़्त यीशु की महिमा करता है।
(१ कुरिन्थियों २:१०, यूहन्ना १६:१४)

पवित्र आत्मा जो मेरे अंदर है

जब मैंने प्रभु यीशु पर पहली बार विश्वास किया, मुझपर उन्होंने मोहर लगाया, यीशु के वादे के अनुसार–**पवित्र आत्मा**।
(इफ़िसियों १:१३, १४)

पवित्र आत्मा मुझमें वास करता है, और मेरे अंदर सदा के लिये रहेगा, वह मेरे वारिस होने की जमानत है।
(१ कुरिन्थियों ६:१९, यूहन्ना १४:१६, इफ़िसियों १:१३, १४)

पवित्र आत्मा मुझे गवाही देने में सामर्थ्य देता है उसीके द्वारा मैं बलवन्त होकर प्रभु का वचन बोलता हूँ।
(प्रेरितों : १:८)

पवित्र आत्मा मेरी हर सच्चाई में अगुवाई करता है।
(२ कुरिन्थियों ३:६, यूहन्ना १६:१३, १४)

मेरी कमज़ोरी में पवित्र आत्मा सहायता देकर मुझे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करने सिखाता है, उसी के द्वारा मैं हर वक़्त प्रार्थना में रहता हूँ, हर तरह की प्रार्थनायें और विनंती करते हुए।
(रोमियों ८:२६, २७, इफ़िसियों ६:१८)

पवित्र आत्मा मुझमें यीशु की महिमा करता है और उसीके द्वारा मेरे हृदय में परमेश्वर का प्रेम ऊँडेला जाता है।
(रोमियों ५:५)

पवित्र आत्मा मेरी अगुवाई करता है

पिता परमेश्वर धन्यवाद कि तूने अपनी आत्मा मेरी अगुवाई करने के लिए दिया है। (नहेम्याह ९:२०)

मेरा सलाहकार, पवित्र आत्मा मुझे सबकुछ सिखायेगा और प्रभु यीशु ने जो भी कहा है, मुझे याद दिलायेगा।
(यूहन्ना १४:२६)

सत्य का आत्मा, मुझे हर सच्चाई में अगुवाई करेगा वह अपने आप से नहीं बोलेगा, लेकिन जो भी वह सुनेगा, वह बोलेगा और मुझे आने वाली बातों के बारे में भी बतायेगा। (यूहन्ना १६:१३)

हे पिता तेरी आत्मा मेरी सहायता करता है, ताकि मैं जानू कि मैं किस तरह प्रार्थना करूँ। (रोमियों ८:२६,२७)

तेरी इच्छा पूरी करने मुझे सिखा, क्योंकि तू मेरा परमेश्वर है, तेरा भला आत्मा मुझे स्थिर रहने में मेरी अगुवाई करें।
(भजन संहिता १४३:१०)

परमेश्वर की आत्मा मेरी अगुवाई करता है, इसीलिए मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ।
(रोमियों ८:१४)

परमेश्वर मेरी आशा

मेरी आशा का परमेश्वर इस वक़्त मुझे आनंद और शांति से भर रहा है, जबकि मैं उसपर भरोसा करता हूँ, ताकि मैं भी आशा से उमड़ता हुआ पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से आगे बढ़ूँ।
(रोमियों १५:१३)

यह आशा हमारे प्राणों के लिये एक ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है और परदे के भीतर तक पहुँचता है।
(इब्रानियों ६:१९)

अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।
(इब्रानियों ११:१)

मेरी इस बात में आत्मविश्वास है कि पिता आपने जो अच्छा कार्य शुरू किया है, प्रभु यीशु के आने तक मुझमें पूर्ण करके ही छोड़ेगा।
(फिलिप्पियों १:६)

हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महान करूणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है। प्रति सुबह वह नई होती रहती है। तेरी सच्चाई महान है।
मेरे मन ने कहा यहोवा मेरा भाग है इस कारण मैं उसमें आशा रखूँगा।
(विलापगीत ३:२२-२४)

परमेश्वर मेरा पिता है

तू ही प्रभु मेरा पिता है, तूने ही मुझे बनाया और रचा है।
(व्यवस्थाविवरण ३२:६)

तूने प्यार में मुझे अपनी सन्तान कहके बुलाया है, प्रभु तूने कहा है कि मैं तुम्हारा पिता हूँगा और तुम मेरी सन्तान होंगे।
मेरे माँगने से पहले ही तुम जानते हो कि मेरी ज़रूरत क्या है।
(इफ़िसियों १:५, २ कुरिन्थियों ६:१८, मत्ती ६:८)

जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही परमेश्वर मुझपर दया करता है।
(भजन संहिता १०३:१३)

मैं डरता नहीं, क्योंकि पिता को यही भाया है कि वह मुझे अपना राज्य दे, और कोई भी मुझे पिता परमेश्वर के हाथों से छीन नहीं सकता।
(लूका १२:३२, यूहन्ना १०:२९)

मैंने ऐसी आत्मा नहीं पाई है जिससे कि मैं एक दास बनकर डरूँ लेकिन मैंने सन्तान बनने की आत्मा पाई है, जिससे कि मैं रोकर पुकारूँ, है अब्बा पिता।
(रोमियों ८:१५)

युद्ध के हमारे शस्त्र

धन्य हो परमेश्वर का, जो हमें प्रभु यीशु ख्रिस्त के द्वारा विजय दिलाता है।
(१ कुरिन्थियों १५:५७)

मैं परमेश्वर का पूरा कवच पहनता हूँ, ताकि शैतान की सारी योजनाओं से सुरक्षित रहूँ, मेरा संघर्ष माँस और लहू से नहीं बल्कि राज करने वालों से, अधिकारों से, इस संसार के अंधकार की शक्तियों से और बुराई की शक्तियों से हैं, जो स्वर्गीय स्थानों में है।
(इफ़िसियों ६:११-१८)

मनुष्य पर भरोसा करने से भी, प्रभु में शरण लेना उचित है। मैं दृढ़ होकर सच्चाई का कमरपट्टा पहनता हूँ, क्योंकि शैतान झूठा है, और झूठ का पिता है। मैं धार्मिकता का कवच पहनता हूँ। प्रभु यीशु ख्रिस्त में विश्वास के द्वारा मैं परमेश्वर के सामने धर्मी बन गया हूँ। (भजन संहिता ११८:८, इफ़िसियों ६:१४, यूहन्ना ८:४४, इफ़िसियों ५:११, इफ़िसियों ६:१४, रोमियों ३:२२, गलातियों २:१६)

मेरे पैर/पाँव शान्ति के सुसमाचार की तैयारी से बँधे हुए हैं। मेरे विश्वास की ढाल से शैतान के सारे जलते हुए तीरों को बुझा सकता हूँ।
(इफ़िसियों ६:१५, ६:१६)

मैं मेरे मन और विचारों को उद्धार के कवच से सुरक्षित रखता हूँ, क्योंकि परमेश्वर की योजनायें मेरे लिये क्या है मुझे पता है, योजनायें मेरी बढ़ौती के लिये, योजनायें मुझे एक आशा और भविष्य देने के लिये।
(इफ़िसियों ६:१७, १ थिस्सलुनीकियों ५:८, यिर्मयाह २९:११)

आत्मा की तलवार याने प्रभु का वचन मेरा शस्त्र है। इसके द्वारा मैं हर एक किला / गढ़ को, हर एक बहस और झूठे दावे को, जो परमेश्वर के ज्ञान के विरूद्ध है तोड़ देता हूँ। मैं हर वक़्त हर तरह की प्रार्थनायें और विनंतियों के द्वारा आत्मा में प्रार्थना करता रहता हूँ, सावधान रहते हुए मजबूत मकसद, और प्रयत्नों के द्वारा संतों के लिये प्रार्थना करता रहता हूँ।
(इफ़िसियों ६:१७, २ कुरिन्थियों १०:४,५, इफ़िसियों ६:१८)

मैं प्रभु यीशु में विजय से भी बढ़कर हूँ।
(रोमियों ८:३७)

विवाह में एकता

मैं अपने प्रेमी की हूँ और मेरा प्रेमी मेरा है।
(श्रेष्ठगीत ६:३)

हे परमेश्वर तूने हमें एक बनाया है शरीर में एक होने के लिये।
(उत्पत्ति २:२४)

हे परमेश्वर तुम्हारे साथ हम मिलकर तीनों तागे से बटें है जो जल्दी टूट नहीं सकते।
(सभोपदेशक ४:१२)

हम व्यभिचार का पाप नहीं करेंगे।
(निर्गमन २०:१४)

हम अपने विवाह का आदर करते हैं, और हर स्थिति में साथ रहेंगे और विश्वासघात नहीं करेंगे।
(इब्रानियों १३:४)

हमारा प्यार सुरक्षित रखता है, हर वक़्त भरोसा रखता है, हर वक़्त आशा रखता है, हर वक़्त स्थिर रहता है। वह खुदगर्ज़ नहीं है, और गलतियों का हिसाब नहीं रखता है।
(१ कुरिन्थियों १३:४-७)

मैं अपनी अच्छाई के लिये नहीं भागती हूँ, लेकिन मेरे प्रेमी की अच्छाई के लिये।
(१ कुरिन्थियों १०:२४)

प्रभु यीशु का आदर करते हुए हमारी मदत कर कि हम एक दूसरे के अधीन रहे।
(इफ़िसियों ५:२२)

जिस तरह लोहा लोहे को धार करता है, उसी तरह हम एक दूसरे को तेज़ करते हैं। अगर मैं गिर जाऊँ तो मेरा प्रेमी मुझे उठायेगा।
(नीतिवचन २७:१७, सभोपदेशक ४:१०)

जिस तरह आप पिता में एक है, प्रभु हमें भी एक बना दे।
यीशु के महान नाम से प्रार्थना करते हैं। आमीन।
(यूहन्ना १७:११)

याद रखें- परमेश्वर ने कहा- उत्पन्न हुआ। हम भी कहेंगे उत्पन्न होगा।

कोई यह सोचेगा कि वह परमेश्वर है, वह जो कहेगा उत्पन्न होगा- राज़ की बात यह है कि जब परमेश्वर ने यीशु को हमारे लिये बलिदान किया- तो उन्होंने हमारे सारे पाप अपने ऊपर ले लिये और तब हम परमेश्वर के पुत्र बने- इसलिये हम रोकर पुकारते हैं, ''हे अब्बा पिता''- तो जो भी प्रभु यीशु का स्थान है वह हमारा स्थान है- प्रभु तीन दिनों के बाद ज़िन्दा हुए, हम भी उनकी तरह ज़िन्दा होंगे, इसलिये जो कोई उनपर विश्वास करेगा वह भी अनंत जीवन पायेगा। (रोमियों १०:८-११)

इसलिये हमारी भी वही शक्ति है जो प्रभु यीशु के पास है, ताकि जो भी वचन हम कहेंगे वह उत्पन्न होगा, क्योंकि प्रभु यीशु का स्थान हमारा स्थान है, उनके हाथ हमारे हाथ है, उनका वचन हमारा वचन है।

एक बार जब मैं बहुत बिमार था, मैंने बाइबल जो कि उसके पहले कभी नहीं पढ़ी थी, खोली और मत्ती २६:४० ''क्या तुम मेरे साथ एक घंटा भी न जाग सके?'' वचन पढ़ते ही मुझ पर बिजली सी गिर पड़ी और मेरी आँखों से आँसू बहने लगे और उस दिन से आज तक प्रार्थना करना नहीं भूला और वचन के द्वारा मेरा जीवन बदल गया।

- स्टीफन पिंटो